संज्ञा

संज्ञा की परिभाषाः-

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान और भाव इत्यादि का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं- जैसे

मोहन ईमानदार लड़का है।

मोहन (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

ईमानदार (भाववाचक संज्ञा)

लड़का (जातिवाचक संज्ञा)

संज्ञा के भेद 3 होते है। http://@chaliasmartsudy

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा -

2. जातिवाचक संज्ञा - 1. समूहवाचक संज्ञा 2. द्रववाचक संज्ञा

3. भाववाचक संज्ञा

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञाः-

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान इत्यादि के निश्चित नाम का बोध कराने वाले शब्द को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं-

व्यक्तियों के नामः- मोहन, राधा, श्याम, निखिल, शीला कार्तिक, सीमा, संगीता, अनील, दीक्षा, पार्वती आदि।

2. वस्तुओं के नामः-

उषा पंखा, Cello कुर्सी, Texla टी. वी., अल.जी. फ्रीज, खेतान कूलर, आदि।

3. स्थानों के नामः-

भारत, दिल्ली, अमेरिका, जयपुर, जोधपुर, बिलाड़ा, दीपलाना, अरावली, गंगा आदि।

By Chalia Sir

विशेषः- व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग हमेशा एकवचन में किया जाता है, और ऐसे एकवचन में किया जाता है जिसका बहुवचन न बन सके।

<u>(2) जातिवाचक संज्ञाः-</u>

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान इत्यादि की पूरी जाति वर्ग या समूह का बोध कराने वाले शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

(i) व्यक्तिः- मनुष्य, स्त्री, पुरुष, लड़का, पशु, पक्षी, गाय, बकरी, तोता, कबूतर, बिल्ली, कुत्ता आदि।

(ii) वस्तुः- पंखा, टीवी, कूलर, फ्रिज, कुर्सी, मेज, पेन, पुस्तक, मोबाइल आदि।

(iii) स्थानः- देश, जिला, शहर, तहसील, गांव, विद्यालय, पहाड़, नदी, ई- मित्र आदि।

विशेषः- जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग हमेशा बहुवचन में किया जाता है, अर्थात ऐसे एकवचन में किया जाता है जिसका बहुवचन बन सके।

<u>👉 जातिवाचक संज्ञा के दो भेद हैं -</u>

(1) द्रव्यवाचक संज्ञा (2) समूहवाचक/समुदायवाचक संज्ञा

<u>(1) द्रव्यवाचक संज्ञाः-</u> वे जातिवाचक संज्ञा शब्द जो किसी द्रव्य पदार्थ का बोध कराते हैं, द्रव्यवाचक संख्या शब्द कहलाते हैं।

जैसेः- सोना, चांदी, तांबा, दूध, पानी, तेल, गैस, डीजल, पेट्रोल आदि।

<u>(2) समुदायकवाचक संज्ञा/समूहवाचक संज्ञाः-</u> वे जातिवाचक संज्ञा शब्द जो किसी समुदाय या समूह का बोध कराते हैं, समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं।

जैसेः- सभा, सेना, पुलिस, सम्मेलन, गिरोह, जत्था, टोली, टीम, दल, गण, ढेर, गुच्छा, कुंज आदि।

By Chalia Sir

<u>(3) भाववाचक संज्ञाः-</u> जिस संज्ञा शब्द से किसी पदार्थ के गुण, दोष, धर्म, अवस्था, भाव, विभिन्न व्यापार आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसेः- मिठास, बुढ़ापा, लिखावट, बचपन, दुख, भलाई, जवानी, ईमानदारी, बेईमानी, सेवा आदि।

विशेषः- भाववाचक संज्ञा का प्रयोग हमेशा एकवचन में किया जाता है, बहुवचन में प्रयोग करते ही जातिवाचक संज्ञा हो

By Chalia Sir

जाती है।

(i) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञाः-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
अमर	अमरत्व	मित्र	मित्रता
दानव	दानवता	राष्ट्र	राष्ट्रीयता
ईश्वर्य	ऐश्वर्य	मानव	मानवता
प्रभु	प्रभुता	बच्चा	बचपन
बूढ़ा	बुढ़ापा	शूर	शौर्य

(ii) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञाः-

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
अपना	अपनापन	सर्व	सर्वस्व
निज	निजत्व	पराया	परायापन
मम	ममत्व/ममता	आप	आपा
अहं	अहंकार	स्व	स्वत्व

(iii) विशेषण से भाववाचक संज्ञाः-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
सुंदर	सुंदरता	उदार	उदारता
सम	साम्य	कर्पण	कृपणता
विद्वान	विद्वता	छोटा	छुटपन
बड़ा	बड़प्पन	लघु	लघुता
मधुर	माधुर्य	निर्बल	निर्बलता
धीर	धैर्य	भयानक	भय

By Chalia Sir

कठिन	कठिनाई	अच्छा	अच्छाई
ऊँचा	ऊँचाई	पंडित	पांडित्य

(iv) क्रिया से भाववाचक संज्ञाः-

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
मिलना	मिलन	पढ़ना	पढ़ाई
हँसना	हँसी	घबराना	घबराहट
चिल्लाना	चिल्लाहट	रोना	रुलाई
दौड़ना	दौड़	खाना	खाद्य
कूदना	कूद	मिलाना	मिलाप
चलना	चल	खेलना	खेल
जागना	जागरण	पहनना	पहनावा
लिखना	लेख	बैठना	बैठक

अभ्यास प्रश्न

प्रश्नः- 1 संज्ञा की उचित परिभाषा लिखिए ?

उत्तरः- किसी व्यक्ति वस्तु स्थान अथवा गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं

प्रश्नः- 2 संज्ञा के कितने भेद माने गए हैं ?

उत्तरः- संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद तथा अन्य दो भेद माने गए हैं।

प्रश्नः- 3 जातिवाचक संज्ञा की परिभाषा लिखिए ?

उत्तरः- जिस संज्ञा से किसी एक जाति या एक वर्ग की सभी वस्तुओं का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रश्नः- 4 व्यक्ति वाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?लिखिए।

By Chalia Sir

उत्तरः- जिस संज्ञा शब्द से किसी विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा यह स्थान का ज्ञान हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं

प्रश्नः- 5 व्यक्तिवाचक संज्ञा और जातिवाचक संज्ञा में क्या अंतर बताइए। उत्तरः- वे संज्ञा शब्द जो किसी विशेष व्यक्ति वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा तथा इसके विपरीत जो संज्ञा शब्द अपनी सामान्य जाति का बोध कराते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रश्नः- 6 भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?

उत्तरः- जिन संज्ञा शब्दों से किसी भाव, गुण, अवस्था या क्रिया के व्यापार आदि का बोध कराते हैं, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

प्रश्नः- 7 व्यक्तिवाचक एवं जातिवाचक संज्ञा शब्दों को छांटिए-

राम, बंदर, नदी, गंगा, कमल, अजमेर, देश, छात्र

उत्तरः- व्यक्तिवाचक संज्ञाः- राम, गंगा, कमल, अजमेर

जातिवाचक संज्ञाः- बंदर, नदी, देश, छात्र

By Chalia Sir

प्रश्नः- 8 'मिठास' शब्द है?

(अ) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ब) जातिवाचक संज्ञा

(स) भाववाचक संज्ञा (द) समूहवाचक संज्ञा

उत्तरः- (स) भाववाचक संज्ञा

By Chalia Sir

प्रश्नः- 9 देश को हानि 'जयचंदों' से होती है, रेखांकित शब्द में संज्ञा है?

(अ) जातिवाचक संज्ञा (ब) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(स) भाववाचक संज्ञा (द) द्रव्यवाचक संज्ञा

उत्तरः- (अ) जातिवाचक संज्ञा

प्रश्नः- 10. "तुम्हें धोखा नहीं देना चाहिए था।" वाक्य में धोखा संज्ञा है?

(अ) भाववाचक संज्ञा (ब) समुदाय वाचक संज्ञा

(स) जातिवाचक संज्ञा (द) व्यक्ति वाचक संज्ञा

उत्तरः- (अ) भाववाचक संज्ञा

By Chalia Sir

सर्वनाम

सर्वनाम :- सर्व (सभी) + नाम (संज्ञा)

सर्वनाम का शाब्दिक अर्थः- सबका नाम

सर्वनाम की परिभाषाः- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसेः- विकास जयपुर रहता है वह वहां नौकरी करता है।

हरिश के पिताजी विदेश रहते हैं, वे वहां नौकरी करते हैं।

By Chalia Sir

हिंदी में मूल सर्वनाम 11 होते है - मैं, तू, वह, यह, आप, जो, सो, कौन, क्या, कोई, कुछ

सर्वनाम के भेदः- छह होते है।

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

YouTube Channel Chalia Smart Study

By Chalia Sir

1. पुरुषवाचक सर्वनामः-

जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग किसी पुरुष के स्थान पर प्रयुक्त होता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः- मैं, हम, तू, तुम, वह, वे, ये आदि।

वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग बोलने वाला वक्ता, सुनने वाला श्रोता या किसी अन्य के लिए प्रयोग किया जाता है, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते है।

(i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

(ii) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

(iii) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

By Chalia Sir

(i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनामः-

जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला वक्ता अपने नाम के स्थान पर करता है, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः- मैं, मेरा, मेरी, मेरे, हम, हमारा, हमारी, हमारे, हमें, हमको, मुझे, मुझको आदि।

उदा• मैं अपना कार्य कर रहा हूं।

मुझे अपनी पुस्तक पढ़नी है।

हम सभी को कोरोना से मिलकर लड़ना है।

(ii) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामः- जिस सर्वनाम का प्रयोग सुनने वाले के नाम के स्थान पर किया जाता है उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसेः- तू, तुम, तेरा, तुम्हारा, तुमको, तुझे, आप, आपका, आपकी, आपके, आदि।

उदा• तुम अपना ख्याल रखना।

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

भगवान करे कि तुम्हारा सपना पूरा हो।

(iii) अन्य पुरुषवाचक सर्वनामः- जिसकी संबंध में कुछ कहा जाता है , उसके नाम के स्थान पर वक्ता द्वारा जी सर्वनाम का प्रयोग होता है उसे अन्य पुरुषवाचक कहते हैं।

जैसेः- वह, उसका, उसकी, उनका, उसके, यह, ये, वे आदि।

उदा• यह मेरा मित्र है।

• उसको बुलाकर लाओ।

• इसको नया पैन दो।

• उसकी कल सगाई है।

• उसको मत जाने दो

YouTube Channel Chalia Smart Study

By Chalia Sir

2. निश्चयवाचक सर्वनामः-

वे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग किसी निश्चित वस्तु के लिए किया जाता है,निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसेः- यह, वह, ये, वे

उदा• •यह मेरी पुस्तक है। • वह मेरी गाड़ी है।

यह हमारी कुर्सियां है। • वह किसकी कॉपी है।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनामः-

वे सर्वनाम शब्द जो किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं,

जैसेः- कोई, कुछ, किसी

उदा• बाहर कोई खड़ा है।

अंदर कुछ पड़ा है।

चाय में कुछ गिरा है।

कोई आपको बुला रहा है।

By Chalia Sir

4. संबंधवाचक सर्वनामः-

जो सर्वनाम शब्द वाक्य में परस्पर संबंध का बोध कराते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते है।

जैसेःही जो पढ़ेगा सो पास होगा।

जिसकी लाठी उसकी भैंस

जिनके खेत उनके बैल

इन उदाहरणों में जो-सो, जिसकी-उसकी, जिनकी-उनके शब्द पर स्वर संबंध का बोध करा रहे हैं। अतः संबंधवाचक सर्वनाम है।

By Chalia Sir

5. प्रश्नवाचक सर्वनामः-

जो सर्वनाम शब्द प्रश्न का बोध कराते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः- कहां, क्या, किसी, कब, किसका, किसकी, क्यों, कहां, कैसे आदि।

उदा• आप यहां क्यों आए ?

आप खाने में क्या लोगे ?

आपको किससे मिलना है ?

आप अलवर में कहां रहते हैं ?

हम आपके कौन हैं ?

6. निजवाचक सर्वनामः-

जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग कर्ता स्वयं के लिए प्रयुक्त करता है, अर्थात जो निजता का बोध कराते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः- आप, अपने - आप, स्वयं, खुद, स्वतः

उदा• मैं अपना कार्य अपने- आप करता हूँ।

• वह घर स्वयं चला जाएगा।

• हम अपने कर्तव्य को स्वयं निभा लेंगे।

• मैं अपना खाना खुद ही पकाता हूँ।

By Chalia Sir

By Chalia Sir

अभ्यास प्रश्न

प्रश्नः- 1. पुरुषवाचक सर्वनाम के कितनी भेद होते हैं ?

उत्तरः- पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते है -

1. उत्तम पुरुष 2. मध्यम पुरुष 3. अन्य पुरुष

प्रश्नः- 2. जो परिश्रम करेगा उसे ही सफलता मिलेगी। यह वाक्य किस सर्वनाम का उदाहरण है-

उत्तरः- इस वाक्य में संबंधवाचक सर्वनाम है।

प्रश्नः- 3. निजवाचक सर्वनाम की परिभाषा लिखिए ?

उत्तरः- जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग कर्ता स्वयं के लिए प्रयुक्त करता है उसे निजवाचक सर्वनाम शब्द कहते हैं।

जैसेः- स्वयं, आप, अपना खुद आदि।

प्रश्नः- 4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं?लिखिए -

उत्तरः- जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत नहीं होता है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः- कोई, कुछ आदि।

प्रश्नः- 5. तुम्हारे को माताजी बुला रहे हैं। उचित सर्वनाम लगाकर वाक्य को शुद्ध कीजिए।

उत्तरः- शुद्ध वाक्य - तुमको माताजी बुला रही हैं।

प्रश्नः- 6. सर्वनाम के भेद होते हैं ?

(अ) तीन (ब) चार (स) पांच (द) छह

उत्तरः- (द) छह

प्रश्नः-7. शायद कमरे में 'कोई' छिपा हुआ है। इस वाक्य में रेखांकित शब्द में कौनसा सर्वनाम है।

(अ) प्रश्नवाचक सर्वनाम (ब) संबंधवाचक सर्वनाम

(स) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (द) निजवाचक सर्वनाम

उत्तरः- (स) अनिश्चयवाचक सर्वनाम।

प्रश्नः- 8. सर्वनाम किसे कहते हैं ?

उत्तरः- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

प्रश्नः- 9. निम्नलिखित में से संबंधवाचक सर्वनाम कौनसा है?

(अ) जो (ब) कुछ (स) आपका (द) कौन

उत्तरः- (अ) जो

प्रश्नः- 10. आज कौन जायेगा ? इस वाक्य में कौनसा सर्वनाम है।

उत्तरः- प्रश्नवाचक सर्वनाम।

By Chalia Sir

विशेषण

• अर्थ - विशेषता बताने वाले

• परिभाषाः- किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं अर्थात संज्ञा सर्वनाम की जो विशेषता बताई जाती है उसे विशेषण कहते है-

• जैसेः- लाल मिर्च, काली गाय, ईमानदार लड़का, नीला आकाश

• विशेष्यः- विशेषण के द्वारा जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं-

• जैसेः- सुंदर बच्चा, लाल चूड़ियां, कमजोर लड़का

• प्रविशेषणः- विशेषण की भी विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं-

• जैसेः- बहुत कमजोर लड़का, अत्यंत ईमानदार आदमी।

• विशेषण के भेद :- पाँच होते है।

(i) गुणवाचक विशेषण

(ii) संख्यावाचक विशेषण

(iii) परिमाणवाचक विशेषण

(iv) संकेत वाचक/सार्वनामिक विशेषण

(v) व्यक्तिवाचक विशेषण

By Chalia Sir

(i) गुणवाचक विशेषणः-

वे विशेषण शब्द जो किसी रूप, रंग, आकार, स्वभाव, गुण, दोष, दशा, स्वाद, गंध आदि का बोध कराते है, गुणवाचक विशेषण कहलाते है,

जैसेः- सुंदर लड़की, लाल टमाटर, पतला दुपट्टा, झगड़ालू लड़का, ईमानदार महिला, बेईमान आदमी, गरीब परिवार, मीठा आम, खट्टा अंगूर, चिकना घड़ा, काला आदमी, विद्वान व्यक्ति आदि।

गुणवाचक विशेषण में संज्ञा के गुण या दोष का बोध कराया जाता है जैसेः -

(1) गंधवाचकः- दुर्गंधयुक्त, सुगंधित, खुशबूदार आदि।

(2) गुणबोधनः- वीर, श्रेष्ठ, सत्यवादी, ईमानदार।

(3) दोषबोधनः- अभिमानी, क्रूर, दुष्ट, भीरू, कुरूप, डरपोक आदि।

(4) आकारबोधकः- षट्कोण, नुकीला, तिकोना, चौकोर, गोल, आयताकार, लंबा, चौड़ा, आदि।

(5) दशाबोधकः- स्वस्थ, रोगी, मोटा, पतला, कमजोर, आदि।

(6) दिशाबोधकः- उत्तरी, पश्चिमी, पूर्वी, दक्षिणी आदि।

(7) अवस्थाबोधकः- बाल्य, युवा, प्रौढ़, वृद्ध आदि।

(8) रंगबोधकः- सफेद, नीला, काला, हरा, पीला, आदि।

(9) समयबोधनः- रात्रि, निशीथ, संध्या, दोपहर, प्रातः, आदि।

(10) स्थानबोधनः- नीचा, ऊंचे, देसी, विदेशी, लखनवी, बनारसी, भारतीय, आदि।

(11) स्पर्षबोधकः- खुरदरा, कोमल, कठोर, आदि।

(12) स्वादबोधकः- चटपटा, मीठा, खट्टा, कड़वा, कसैला, तीखा, आदि।

(ii) संख्यावाचक विशेषणः-

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते है। जैसेः -

दो लड़के, चार गाय

मैदान में पांच लड़के खेल रहे हैं।

कक्षा में कुछ छात्र बैठे हैं।

उपर्युक्त वाक्य में 'दो' 'चार' 'पांच' और 'कुछ' संख्यावाचक विशेषण है।

• संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैंः-

(1) निश्चित संख्यावाचक (2) अनिश्चित संख्यावाचक

(1) निश्चित सख्यावाचकः- जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध हो, निश्चित संख्यावाची विशेषण कहलाते हैं।

इनके भी चार अपभेद होते हैंः-

(क) गणनाबोधकः- एक, दो, तीन, चार.....

(ख) क्रमवाचकः- पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा.....

(ग) आवृत्तिवाचकः- दुगना, तिगुना, चौगुना.....

(घ) समुदाय वाचकः- दोनों, तीनों, चारों.....

By Chalia Sir

(2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण- जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध ना हो।

जैसेः- कुछ पुस्तकें, कुछ आदमी, बहुत लड़के, थोड़े से रुपए आदि।

(iii) परिमाणवाचक विशेषणः-

वे विशेषण जो किसी पदार्थ के निश्चित या अनिश्चित मात्रा, परिमाण, नाप या तोल आदि का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसेः- दो लीटर दूध, ज्यादा दूध आदि।

• इसके भी दो उपभेद होते हैं -

(1) निश्चित परिमाण वाचकः- निश्चित मात्रा का बोध कराता है।

जैसेः- पांच लीटर दूध, दो मीटर कपड़ा, पांच लीटर तेल, एक क्विंटल चावल आदि।

(2) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषणः- निश्चित मात्रा का बोध न कराए। जैसेः- ज्यादा पानी, ज्यादा कपड़ा, लीटर तेल, अधिक चावल, जरा- रा - नमक आदि।

(iv) सार्वनामिक / संकेत वाचक विशेषणः-

वे सर्वनाम जो संज्ञा के पूर्व प्रयुक्त होकर विशेषण का रूप धारण कर लेते है, उन्हें संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसेः-

यह पुस्तक मेरी हैं।

इस गेंद को मत फेंको।

इस पुस्तक को पढ़ो।

वह कौन गा रही है?

उपर्युक्त वाक्यों में यह, इस, उस, वह आदि शब्द संकेत वाचक विशेषण है।

• सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतरः- यदि कोई शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो तो वह सर्वनाम होता है।

लेकिन जब वही शब्द संज्ञा के तुरंत पहले प्रयुक्त हो तो सार्वनामिक विशेषण होता है। जैसेः-

वह मेरी पुस्तक है। (सर्वनाम)

वह पुस्तक मेरी हैं। (सार्वनामिक विशेषण)

By Chalia Sir

यह लड़की बहुत बुद्धिमती है। (सार्वनामिक विशेषण)

यह बहुत बुद्धिमती है। (निश्चयवाचक सर्वनाम)

यह मेरी घड़ी हैं। (निश्चयवाचक सर्वनाम)

यह घड़ी मेरी हैं। (सार्वनामिक विशेषण)

(v) व्यक्तिवाचक विशेषणः-

व्यक्तिवाचक संज्ञा का कोई शब्द जब विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो अर्थात् व्यक्तिवाचक संज्ञा से बनने वाला विशेषण व्यक्तिवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसेः- भारतीय नारी, जापानी जूते, जोधपुरी साफे आदि।

• विशेषण की अवस्थाएंः- तीन होती हैं।

1. मूलावस्थाः- किसी व्यक्ति, वस्तु और स्थान की मूल अवस्था का बोध कराने वाले शब्द मूलावस्था कहलाती हैं।

जैसेः- पूजा ईमानदार लड़की हैं।

2. उत्तरावस्थाः- विशेषण की वह अवस्था जो दो संख्याओं के बीच तुलना का बोध कराती है, विशेषण की उत्तरावस्था कहलाती है।

जैसेः- पूजा दीक्षा से ईमानदार लड़की हैं।

3. उत्तमावस्थाः- विशेषण की वह अवस्था जिसमें किसी समूह में से किसी एक को सर्वश्रेष्ठ बताया जाता है, वह विशेषण की उत्तमावस्था होती है।

जैसेः- कवियों में कालिदास सर्वश्रेष्ठ कवि है

विशेषण की तीनों अवस्थाओं के रूपः-

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमाअवस्था
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
लघु	लघुत्तर	लघुत्तम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
चतुर	चतुरतर	चतुरतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
उष्ण	उष्णतर	उष्णतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम

By Challa Sir

क्रिया

• क्रिया का अर्थ हैः- "करना"

• परिभाषा - "वे शब्द जिनके द्वारा किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है उन्हें क्रिया कहते है।" जैसेः-

  • महिलाएं मंगल गीत गा रही है।

  • धोबी कपड़े धो रहा है।

  • शाम पढ़ता है।

  • मयूर नाचता है।

• क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

• क्रिया एक विकारी शब्द है।

क्रिया के भेदः-

• क्रिया के निम्न आधार पर भेद किए जाते हैंः-

1. कर्म के आधार पर

2. प्रयोग का संरचना के आधार पर

3. काल के आधार पर

1. कर्म के आधार पर क्रिया के भेदः- दो भेद होते हैं।

(1) अकर्मक क्रिया

(2) सकर्मक क्रिया

1. अकर्मक क्रियाः- वे क्रियाएं जिनके साथ क्रम प्रयुक्त नहीं होता तथा क्रिया का प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर पड़ता है, उसे अकर्मक किया कहते हैं। जैसे-

• कुता भौकता है।

• बच्चा रोता हैं।

By Chalia Sir

• कविता हंस हंसती है।

• टीना सोती है।

• महेश पैदल चलता हैं।

• बच्चा रोता है।

• आदमी बैठा है।

उपर्युक्त वाक्यों में भौकना, हंसना, सोना, रोना, बैठना आदि अकर्मक क्रियाएं हैं।

<u>अकर्मक क्रिया के भी दो भेद होते हैंः-</u>

(i) पूर्ण अकर्मक क्रिया

(ii) अपूर्ण अकर्मक क्रिया

<u>(I) पूर्ण अकर्मक क्रियाः-</u>

यह कर्म से रहित अकर्मक क्रियाएं अपने आप में पूर्ण है अर्थात इन क्रियाओ को अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए किसी कर्म या पूरक शब्द की आवश्यकता नहीं होती है। जैसेः-

सोना, रोना, हंसना, होना, दौडना, भागना, उडना, मंडराना, आना, जाना, निकलना, घुसना, चलना, फिरना, तैरना, करना आदि अकर्मक क्रियाएं हैं। जैसेः-

• राम सोता है।
• निखिल रोता है।
• मोहन हंसता है।
• सुरेश दौड़ रहा है।
• राम भाग रहा है।
• पक्षी उड़ते हैं।
• पक्षी मंडरा रहे हैं।
• वह आ रहा है।
• राम जा रहा है।
• वह घर से निकल गया है।
• वह चलता है।
• मछली तैरती है।
• वह गिर गया है।

<u>(ii) अपूर्ण अकर्मक क्रियाः-</u>

"जो क्रियाएं अपने अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए अपने से पूर्व किसी ऐसे पूरक शब्द की अपेक्षा रखती है जो कर्ता से संबंधित हो उन्हें अपूर्ण क्रियाएं कहते हैं।" जैसेः-

• राकेश बहुत चालाक निकला।

By Chalia Sir

• मेरा भाई वकील है।

उपर्युक्त वाक्य में चालाक, वकील पूरक शब्द है।

(2) सकर्मक क्रिया:-

वे क्रियाएं, जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, अर्थात वाक्य में क्रिया के साथ कर्म भी प्रयुक्त हो उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं।

• सकर्मक क्रिया के दो उपभेद होते हैं।

(1) एक कर्मक क्रिया

(2) द्विकर्मक क्रिया

(1) एककर्मक क्रिया:- जब वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त, हो तो उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं। जैसेः-

• रमेश पत्र लिख रहा हैं। • दुष्यंत भोजन कर रहा है।

• बालक कहानी लिख रहा है। • मालती ने पत्र लिखा।

• मनीषा गीत गाएगी। • राधा गाना गाती हैं।

(2) द्विकर्मक क्रिया:- जब वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो तो उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसेः-

• रेखा बच्चे को खाना खिला रही हैं।

• अध्यापक जी छात्रों का भूगोल पढ़ रहे हैं।

इस वाक्य में 'पढ़ा रहे हैं' क्रिया के साथ 'छात्रों' एवं 'भूगोल' दो कर्म प्राप्त हुए हैं अतः 'पढ़ रहे हैं' द्विकर्मक क्रिया है।

नोटः- इसके अतिरिक्त सकर्मक क्रिया का एक अन्य भेद है- अपूर्ण सकर्मक क्रिया।

(3) अपूर्ण सकर्मक क्रिया:- जो क्रियाएं कर्म के होने के बावजूद पूर्ण अर्थ देने में असमर्थ होती है, उन्हें अपूर्ण सकर्मक क्रियाएं कहते हैं। जैसेः-

By Chalia Sir

रंगना. मानना, समझना, चुनना, बनाना, आदि क्रियाएं इसी श्रेणी के अंतर्गत आती है। जैसे-

• मैं तुम्हें अपना भाई मानता हूं।

• वह पवन को बुद्धिमान समझता है।

• सुमन हमें मुर्ख बना रही है।

उपर्युक्त वाक्यों में भाई, बुद्धिमान, मूर्ख आदि पूरक शब्द है।

विशेषः- अकर्मक और सकर्मक क्रिया की पहचानः-

अकर्मक और सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए वाक्य प्रयुक्त क्रिया से "क्या/ किसको" के द्वारा प्रश्न किया जाता हैं, यदि इनका उत्तर मिले लेकिन कर्ता को छोड़कर तो क्रिया सकर्मक होती है,

कर्ता की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से 'कौन' के द्वारा प्रश्न किया जाता हैं, यदि क्या और कौन दोनों का उत्तर एक ही मिले तो वह कर्ता होता है तथा क्रिया अकर्मक होती है। जैसेः-

• बच्चा रोता हैं। (अकर्मक क्रिया)

• तुम पुस्तक पढ़ रहे हो। (सकर्मक क्रिया)

('क्या'पढ रहे हो- पुस्तक)

• राम ने रावण को मारा।

(राम ने 'किसको' मारा- रावण को)

उपर्युक्त वाक्य में पुस्तक और रावण कर्म है।

2. प्रयोग या संरचना के आधार परः- क्रिया के आठ भेद होते हैं।

1. सामान्य क्रियाः- जब किसी वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग हुआ हो उसे सामान्य क्रिया कहते हैं। जैसेः-

• कुत्ता भौंकता • महेंद्र जाता है।

• सुमन आती है। • बच्चे आएंगे।

2. सहायक क्रियाः- मुख्य क्रिया की सहायता के लिए प्रयुक्त होने वाली क्रिया सहायक क्रिया कहलाती हैं - जैसेः-

• रोगी ने दवा ली हैं।

By Challa Sir

• अरविंद पढ़ता है।

• वह सो रहा हैं।

• शालू खेलने जाती थी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'है' 'थी' सहायक क्रियाएं हैं।

3. संयुक्त क्रियाः- जब किसी वाक्य में दो भिन्नार्थक क्रियाएं प्रयुक्त हो तो उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसेः-

• मोहन पुस्तक पढ़ चुका होगा।

• माताजी ने खाना बना लिया।

• मैं छत से कूद पड़ा। • पक्षी आकाश में उड़ा करते हैं।

• विकास पत्र लिखने लगा। • मैंने पुस्तक पढ़ ली।

4. प्रेरणार्थक क्रियाः- वे क्रियाएं जिन्हें कर्ता स्वयं न करके दूसरों को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है, वह प्रेरणार्थक क्रियाएं कहलाती है।

जैसेः- • कविता सविता से पत्र लिखवाती है।

• ग्वाले कृष्ण से गाय चरवाते हैं।

• इतिशा पूजा से गृहकार्य करवाती हैं।

• अध्यापक छात्र से पाठ पढ़वाता है।

• राम श्याम से गृह कार्य करवाता है।

• मोहन ने राम को श्याम से पुस्तक दिलवाई।

5. पूर्वकालिक क्रियाः- जब किसी वाक्य में दो क्रियाएं प्रयुक्त हुई हो तथा उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले संपन्न होती है तो पहले संपन्न होने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

पहचानः- वाक्य में "कर या करके" आएगा।

जैसेः-

• हिमांशु खाना खाकर सो गया। • सोहन पढ़कर सो गया।

By Chalia Sir

• वह कपड़े धोकर खाना पकाती हैं। • वह खेलकर घर आ गया।

• चोर उठकर भाग गया।

• बालिका खाना खाकर विद्यालय चली गई।

• लोग मेला देखकर अपने-अपने घर लौट गए।

6. नामधातु क्रियाः- किसी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से बनने वाली क्रिया नामधातु क्रिया कहलाती हैं। जैसेः-

शर्म से शर्माना, गर्म से गर्माना, हाथ से हथियाना, दुख से दुखाना, झूठ से झुठलाना, लात से लतियाना, फिल्म से फिल्माना आदि नाम धातु क्रियाएं हैं।

• संज्ञा शब्दों से निर्मित नाम धातु क्रियाः-

शर्म से शर्माना, रंग से रंगना, लात से लतियाना, झूठ से झूठलाना, धिक्कार से धिक्कारना, लाज से लजाना, हाथ से हथियाना, ठग से ठगना।

• सर्वनाम शब्दों से निर्मित नाम धातु क्रियाः-

अपना से अपनाना

• विशेषण शब्दों से निर्मित नाम धात् क्रियाः-

नरम से नरमाना, मोटा से मुटाना, दोहरा से दोहराना, साठ से सठियाना, गम से गर्माना।

• नामधातु क्रिया के कुछ उदाहरण देखिएः-

• लड़की शर्माने लगी।

• गीता बहुत बतियाती है।

• मेहमान के लिए जरा चाहे गर्मा दो।

• आजकल श्याम मुझे झुठलाने लगा है।

• पुलिस चोर को लतियाते थाने में ले गई।

7. सजातीय क्रियाः- वे क्रियाएं जहां कर्म तथा क्रिया दोनों एक ही धातु से बनकर एक साथ प्रयुक्त होते हैं, वहां सजातीय क्रियाएं कहलाती है।

:- कुछ उदाहरण देखिएः-

By Challa Sir

• भारत ने पाकिस्तान से लड़ाई लड़ी।

• भारत ने अनेक लड़ाइयां लड़ी।

• खिलाड़ी ने अच्छा खेल खेला।

• मोहन ने एक बात बताई।

• निखिल ने हिमालय पर चढ़ाई चढ़ी।

8. कृदंत क्रियाएं :- जब किसी मूल धातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग करने पर जो क्रिया बनती है उसे कृदंत क्रिया कहते हैं। जैसेः-

पढ़ से पढ़ना। चल से चलना, चलकर। लिख से लिखा, लिखना लिखकर।

काल के आधार पर क्रिया के भेदः- तीन भेद माने गए हैं।

1. भूतकालिक क्रिया

2. वर्तमान कालिक क्रिया

3. भविष्यत कालिक क्रिया

1. भूतकालिक क्रियाः- क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा बीते समय में कार्य के संपन्न होने का बोध होता है, उसे भूतकाल क्रिया कहते हैं। जैसेः-

• मनीषा गई। • सलीम पुस्तक पढ़ रहा था

• बच्चे विद्यालय जाते हैं। • रमेश घर जा रहे हैं।

2. वर्तमान कालिक क्रियाः- क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा वर्तमान समय में कार्य के संपन्न होने का बोध होता है, उसे वर्तमान कालिक क्रिया कहते हैं। जैसेः-

• सोहन चाय बनाता है। • मोनिका गाना गाती है।

• दीक्षा खाना बना रही है। • हिना पुस्तक पढ़ रही हैं।

3. भविष्य कालिक क्रियाः- क्रिया के जिस रूप के द्वारा आने वाले समय में अर्थात भविष्य में किसी कार्य के होने का बोध हो भविष्यत कालिक क्रिया कहलाती है- जैसेः-

• मोहन आएगा। • सीमा खाना पकाएगी।

• अशोक पत्र लिखेगा। • प्रति कल जयपुर जाएगी।

By Chalia Sir

अव्यव (अविकारी शब्द)

परिभाषाः- वे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, कारक और काल के अनुसार परिवर्तन नहीं होता है अर्थात् वे शब्द जो हमेशा एक ही रूप में रहते हैं, अविकारी/ अव्यय कहलाते हैं।

जैसेः- रमेश धीरे-धीरे खाता है।

• रमेश धीरे-धीरे खाता है।

• बच्चा धीरे - धीरे लिखेगा।

• अव्यय के मुख्यतः चार भेद होते हैं -

1. क्रिया विशेषण अव्यय 2. संबंध बोधक अव्यय

3. समुच्चय बोधक अव्यय 4. विस्मयादिबोधक अव्यय

(1) क्रिया विशेषण अव्ययः- वे अव्यय शब्द जो किसी क्रिया की विशेषता का बोध कराते हैं, क्रिया विशेषण कहलाते हैं - जैसेः-

• राम धीरे - धीरे पढ़ता है। • चेतक घोड़ा तेज दौड़ता है।

• रमेश अभी - अभी गया है।

✓ क्रिया विशेषण के चार उपभेद होते है -

(i) कालबोधक क्रिया विशेषण Chalia Sir

(ii) स्थान बोधक क्रिया विशेषण

(iii) परिमाण बोधक क्रिया विशेषण

(iv) रीतिबोधक क्रिया विशेषण

(i) कालबोधक क्रिया विशेषण :- वे अव्यय शब्द जो किसी क्रिया के घटित होने के समय का बोध कराते हैं, कालबोधक किया-विशेषण कहलाते हैं- जैसेः-

अभी, तभी, पहले, बाद में, सवेरे, शाम को, दिनचर, रातभर, शीघ्र, सदा, अब, कब, आजकल, लगातार, बार-बार इत्यादि।

उदा•

• निखिल अभी-अभी गया है। • मैं प्रातःकाल घूमने जाता है।

By Chalia Sir

• वह आजकल दिखता नहीं है। • वे आजकल जाते नहीं हैं।

• वह तो बहुत पहले ही चला गया। • मनीष तुरन्त निकल गया।

• वह दिनभर खेलता रहता है। • वह लगातार पढ़ता रहता है।

• शीला पहले चली गई। • रीया रातभर पढ़ती है।

• मैं बार-बार भूल जाता हूँ। • वह आज जाएगा।

• वह शाम को आएगा। • वह कल आएगा।

विशेषः- कालबोधक क्रिया विशेषण की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से 'कब' के द्वारा प्रश्न किया जाता है।

(ii) स्थानबोधक क्रिया विशेषणः- वे अव्यय शब्द जो किसी क्रिया के घटित होने के स्थान या दिशा का बोध कराते हैं, स्थानबोधक क्रिया विशेषण कहलाते हैं-

जैसेः- यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, पास, दूर, आमने, सामने, आगे, पीछे, दाएं - बाएँ, ऊपर, नीचे, अंदर, बाहर इत्यादि।

जैसेः- • कार्तिक यहां बैठेगा। • बच्चा बाहर खेल रहा है।

• भारती नीचे बैठी है। • सोनिका भीतर खेल रही हैं।

• कौआ ऊपर उड़ रहा है। • वह उधर गया है।

• निखिल आगे निकल गया। • सीमा पीछे-पीछे चल रही है।

• लड़का बाएँ बैठा हैं। • लड़की दाएँ देख रहीं है।

विशेषः- स्थानबोधक क्रिया विशेषण की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से 'कहाँ' के द्वारा प्रश्न किया जाता है।

(iii) परिमाण बोधक क्रिया विशेषणः- वे अव्यय शब्द जो क्रिया के पूर्व प्रयुक्त होकर उसकी मात्रा का बोध कराते है परिमाण बोधक क्रिया विशेषण कहलाते है। जैसेः-

थोड़ा, अति, बराबर, ठीक, बहुत, कम, ज्यादा, तनिक, जरा-सा, इतना, उतना, जितना, मात्रा, न्यून, अधिक इत्यादि।

उदा•

• मोनिका बहुत खाती है। • निखिल बहुत सोता है।

• विकास बहुत पीता है। • वह बहुत खाता है।

• वह कम खेलता है। • सीमा जरा-सा खाती है।

• मीनू कम सोती है। • देवकी तनिक सोती है।

By Chalia Sir

• तुम ज्यादा पीते हो। • आप ज्यादा पढ़ते हो।

विशेषः- परिमाणबोधक क्रिया विशेषण की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से 'कितना' के द्वारा प्रश्न किया जाता है।

(iv) रीतिबोधक क्रिया विशेषणः- वे अव्यय शब्द जो किसी क्रिया के पूर्व प्रयुक्त होकर क्रिया के होने का ढंग/तरीका/रीति का बोध कराते हैं, रीतिबोधक क्रिया विशेषण कहलाते हैं -

जैसेः- ऐसे, अचानक, धीरे - धीरे, अच्छी तरह, सचमुच, सहसा, वास्तव में, शायद, इसलिए, जरूर, शीघ्र, तेज इत्यादि।

• वह अचानक आ गया। • मैं सहसा चला गया।

• स्वाति धीरे - धीरे बोलती हैं। • उसने ऐसे कहा।

• आप अच्छी तरह पढ़ा करो। • मैं सचमुच चला जाऊंगा।

• वह इसलिए चला गया। • वह शायद आए।

• मैं जरूर आऊंगा। • वह तेज दौड़ता है।

विशेषः- रीतिबोधक क्रिया विशेषण की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से 'कैसे' के द्वारा प्रश्न किया जाता हैं।

(2) संबंधबोधक अव्ययः- वे अव्यय शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के बीच संबंध का बोध कराते हैं संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं-

जैसेः- • घर के सामने बगीचा है। • छत के ऊपर मोर नाच रहा है। • पेड़ के नीचे सांप रेंक रहा है। • बच्चा घर के बाहर खेल रहा है। • मोर बादलों की ओर देखकर नाच रहे हैं।

• घर के सामने मंदिर है। • विद्यालय के आगे तालाब है।

• खुशी के मारे उसका गला भर आया।

• राम के पीछे श्याम बैठा है। • बालक चांद की ओर देख रहा है।

• मंदिर के आगे महल हैं। • मोहन के साथ रहो।

√ क्रिया विशेषण और संबंध बोधक अव्यय में अंतरः- यदि कोई अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बतलाए तो वह क्रिया - विशेषण कहलाता है, लेकिन जब वही अव्यय शब्द संज्ञा/सर्वनाम के बीच संबंध का बोध कराए तो वह संबंध बोधक अव्यय कहलाता है। जैसेः-

• मोहन सुंदर लिखता है। (क्रिया विशेषण)

• मोहन सोहन से सुंदर लिखता है। (संबंधबोधक अव्यय)

By Chalia Sir

• दीक्षा बाहर बैठी है। (क्रिया विशेषण)

• दीक्षा घर के बाहर बैठी है। (संबंधबोधक अव्यय)

• मोहित ऊपर बैठा है। (क्रिया विशेषण)

• मोहित छत के ऊपर बैठा है। (संबंध बोधक अव्यय)

(3) समुच्चयबोधक अव्ययः- वे अव्यय शब्द जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, वे समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं -

जैसेः- और, तथा, एवं, किंतु, परंतु, लेकिन, या, अथवा, इसलिए, क्योंकि, कि, मानो, मगर, फलस्वरूप इत्यादि।

उदा• -

• मनीष ने बाजार से केले और आम खरीदे।

• कृष्ण बाँसुरी बजाता है और राधा नाचती हैं।

• राम तथा श्याम अच्छे मित्र है।

• पिताजी बाजार गए परंतु चॉकलेट नहीं लाए।

• पिताजी ने कहा कि सभी का सम्मान करना।

• मेरे मना करने के फलस्वरूप वह चला गया।

(4) विस्मयादि बोधक अव्ययः- वे अव्यय शब्द जो किसी हर्ष, शोक, घृणा, लज्जा, भय, प्रशंसा, तिरस्कार इत्यादि मनोभावों को प्रकट करते हैं, विस्मयादि बोधक अव्यय कहलाते हैं -

जैसेः- वाह!, अरे!, ओहो!, क्या, हे भगवान!, अच्छा, शाबास, हाय, छिः-छिः इत्यादि।

उदा • -

• वाह ! मजा आ गया। • अरे ! तुम कब आए ?

• ओहो ! मैं तो भूल ही गया था।

• हे भगवान ! बहुत बुरा हुआ।

• छिः - छिः ! बहुत गंदगी हैं।

• अच्छा ! मैं मरजाओं, कितना सुंदर है।

• हाय ! यह तुमने क्या कर डाला।

By Chalia Sir

उपसर्ग

उपसर्ग शब्द उप+सर्ग दो शब्दों से मिलकर बना है 'उप' का अर्थ है - समीप या निकट तथा 'सर्ग' का अर्थ है - सृष्टि करना।

परिभाषाः- वे शब्दांश जो किसी शब्द के प्रारम्भ में जुड़कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते है, उपसर्ग कहलाते हैं।

✓उपसर्ग की विशेषताएंः-

• ये शब्दांश होते हैं।

• ये जिस शब्द के साथ जुड़ते हैं उसका अर्थ परिवर्तन कर देते हैं। • ये किसी शब्द के प्रारंभ में जुड़ते हैं।

• इनका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है।

✓उपसर्गों को तीन भागों में बांटा गया है।

(1) तत्सम/संस्कृत भाषा के उपसर्ग

(2) तद्भव/हिंदी भाषा के उपसर्ग

(3) विदेशी भाषा के उपसर्ग

(1) संस्कृत भाषा के उपसर्ग - संस्कृत में उपसर्गो की संख्या 22 होती है। यह उपसर्ग हिंदी में भी प्रयुक्त होते हैं, इसलिए इन्हें संस्कृत के उपसर्ग कहते हैं.

8 (अ) - अति, अधि, अनु, अप, अपि, अभि, अव, आ

4 (प) - प्रति, प्र, परा, परि

4 (नि, दु) - निर्, निस्, दुर्, दुस्

2 (उ) - उद, उप

2 (स) - सु, सम्

2 - नि, वि

By Chalia Sir

(1) अति (अधिक):-

अतिशय, अतिक्रमण, अतिवृष्टि, अतिशीघ्र, अत्यंत (अति+अंत), अत्यधिक (अति + अधिक), अत्याचार (अति+आचार), अतींद्रिय (अति+इन्द्रिय) अत्युक्ति (अति+उक्ति), अत्युतम (अति+उत्तम), अत्यावश्यक (अति +आवश्यक), अतीव (अति+इव), अत्यंत (अति + अंत),

(2) अधि (अधिक, ऊंचा, प्रधान, मुख्य):-

अधिकरण, अधिभार, अधिक्षेत्र, अधिग्रहण, अधिकार, अधिनियम, अधिसूचना, अध्याय (अधि+आय), अध्यक्ष (अधि+अक्ष), अध्यापक (अधि+आपक), अधिष्ठाता, (अधि+स्थाता), अध्युढा (अधि+ऊढा), अध्यादेश (अधि+ आदेश), अधीक्षक।

(3) अनु (पीछे समान अनुकूल):-

अनुमान, अनुगमन, अनुकरण, अनुक्रम, अनुदेश, अनुताप, अनुच्छेद (अनुछेद), अनुज, अन्वेषण (अनु+एषण), अनुष्ठान, अन्वीक्षा (अनु+ईक्षा), अन्वीक्षक (अनु+ ईक्षक)

(4) अभि (ओर, पास, सामने, कुशल):-

अभिधान, अभिमुख, अभिलाषा, अभियान, अभिरक्षक, अभिलेख, अभ्युदय (अभि+उदय), अभ्यास (अभि+आस), अभ्यागत (अभि+आगत), अभ्यंतर (अभि+अंतर), अभीष्ट (अभि+ ईष्ट), अभ्यास (अभि+आस)

(5) अप (बुरा, विपरीत):-

अपकार, अपमान, अपयश, अपशब्द, अपकीर्ति, अपराध, अपव्यय, अपहरण, अपकर्ष, अपशगुन, अपेक्षा (अप+ईक्षा)

(6) अव (बुरा, हीन):-

अवगुण, अवहेलना, अवगुण, अवसाद, अवज्ञा, अवनति, अवधारण, अवज्ञा, अवगति, अवतार, अवसर, अवकाश, अवलोकन, अवशेष, अवधान, अवाप्ति, अवांतर।

(7) आ (तक):-

आमरण, आरंभ, आकार, आजीवन, आचरण, आकर्षक, आकलन, आदान, आभूषण, आहार, आजन्म, आयात, आतप, आगम, आमोद, आशंका, आरक्षण, आमरण, आगमन।

By Challa Sir

(8) उद् / उत् (ऊपर, श्रेष्ठ):-

उत्कोच, उत्पन्न, उत्पत्ति, उत्पीड़न, उत्कंठा, उत्कर्ष, उत्तम, उत्कृष्ट, उदय (उत्+अय), उन्नत (उत्+नत), उल्लेख (उत्+लेख), उद्धार (उत्+हार), उच्छवास (उत्+श्वास), उज्ज्वल (उत्+ज्वल), उच्चारण (उत्+चारण)

(9) उप (पास, सहायक, नीचे):-

उपवास, उपकार, उपवन, उपनाम, उपचार, उपासना, उपहार, उपसर्ग, उपमंत्री, उपयोग, उपभोग, उपवेद, उपयुक्त, उपभोग, उपेक्षा (उप+ईक्षा), उपाधि (उप+आ+धि), उपाध्यक्ष (उप+अधि+अक्ष), उपन्यास।

(10) दुर् (बुरा, विपरीत, कठिन):-

दुराशा, दुराग्रह, दुराचार, दुरवस्था, दुरुपयोग, दुरभिसंधि, दुर्गुण, दुर्दशा, दुर्घटना, दुर्भावना, दुर्दशा, दुरात्मा

नोटः- संधि पूछे जाने पर 'दुर् का 'दुः' हो जाएगा।

दुर्दशा - दुः + दशा (विसर्ग सन्धि) दुर्दशा = दुर् + दशा (उपसर्ग)

(11) दुस् (कठिन, बुरा, विपरीत):-

दुष्कर्म, दुस्साहस, दुश्चरित्र, दुष्चक्र, दुश्चिंतन, दुश्शासन, दुष्कर, दुष्प्रभाव, दुष्परिणाम, दुष्प्रयोग, दुस्साध्य,

नोटः- किसी शब्द में 'दुश् / दुष् / दुस्' अगर हो तो अलग करने पर उपसर्ग 'दुस्' ही होगा।

(12) निस् (रहित, बिना):-

निष्कपट, निश्चय, निश्चल, निष्काम, निष्कर्म, निष्पाप निष्फल, निस्तेज, निस्संदेह, निष्कलंक निष्कंटक, निष्पक्ष, निष्कपट

नोटः- संधि विच्छेद पूछने पर 'निस्' का 'निः' हो जाएगा।

(13) निर् (रहित, बिना):-

नीरव, नीरस, नीरोग, निरपराध (निर्+अपराध), निराकार, निराहार, निरक्षर (निर्+अक्षर), निराधार, निरामिष, निर्धन, निर्यात, निर्दोष ।

नोटः- संधि विच्छेद पूछने पर 'निर्' का 'निः' हो जाएगा।

निराकार का सन्धि विच्छेदः- निः + आकार (विसर्ग सन्धि) निराकार में उपसर्ग व मूल शब्दः- निर् + आकार

By Chalia Sir

(14) नि (बिना, विशेष, निषेध):-

निसार, निडर, निगम, निवास, निदान, निहत्था, निबंध, निदेशक, निकर, निवारण, न्यून (नि+ऊन), न्याय (नि+आय), न्यास (नि+आस), निषेध, निधन।

(15) प्र (पहले, आगे, अधिक):-

प्रहार, प्रकार, प्रधान, प्रबल, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रहार प्रयत्न, प्रभंजन, प्रपत्र, प्रारंभ, प्रेत, प्राचार्य, प्रायोजक, प्रार्थी।

(16) परा (विपरीत, पीछे, अधिक):-

पराजय, पराभव, पराक्रम, पराभूत, परामर्श, परावर्तन, पराविद्या, पराकाष्ठा, पराबोध।

(17) परि (चारों ओर, पास)

परिक्रमण, परिचय, परिकलन, परिजन, परिपक्व, परित्याग, परिधि, परिधान, परिवेश, परिभ्रमण, परिपूर्ण, परिवर्तन, परीक्षक, पर्यवेक्षक, पर्यावरण, पर्यंत (परि+अंत), पर्याप्त, पर्युषण, पर्यवेक्षक।

(18) प्रति (प्रत्येक, विपरीत):-

प्रतिक्षण, प्रतिफल, प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिहिंसा, प्रत्येक (प्रति+एक), प्रतिरूप, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतीक्षा, प्रत्युत्तर (प्रति+उत्तर), प्रत्याशा।

(19) वि (भिन्न, विशेष):-

विजय, विज्ञान, विदेश, वियोग, विनाश, विपक्ष, विलय, विहार, विख्यात, विधान, व्यवहार (वि+अव+हार), व्यर्थ (वि+अर्थ), व्यायाम (वि+आयाम), व्यंजन (वि+अंजन), व्याधि (वि+आधि), व्यसन (वि+असन), व्यूह (वि+ऊह)

(20) सु (अच्छा, सरल):-

सुगम, सुशासन, सुपाच्य, सुयोग, सुगंध, सुगति, सुबोध, सुयश, सुमन, सुलभ, सुशील, सुअवसर, स्वागत (सु+आगत), स्वल्प (सु+अल्प), सूक्ति (सु उक्ति)।

(21) सम् (समान, अच्छी तरह, पूर्ण शुद्ध):-

संकलन, संगम, संकल्प (सम्+कल्प), संजय, संतोष, संगठन, संचार, संगठन सहयोग, संघर्ष,

By Chalia Sir

संरक्षण।

(22) अपि (भी) :- अपितु, अभिहित, अपिधान

(2) हिन्दी के उपसर्गः-

(1) अ (नहीं, अभाव):- अचल अचूक, अथाह, अडिग, अबेर, अछूता, अपच, अमिट, अचेत, अकाज, अमर, अकाल, अज्ञान, अलग, अटल।

(2) अध (आधा):- अधपका, अधमरा, अधखिला, मथकचरा, अधनंगा, अधगला, अधजला, अधखुला, अधमरा, अधकचरा।

(3) अन (बिना/नहीं):- अनपढ़, अनदेखा, मनचाहा, अनहोनी, अनमोल, अनमेल, अनसुना, अनजान, अनबन, अनबोला, अनगिनत, अनबूझ,

(4) उ (ऊपर/ऊँचा):- उचक्का, उखाडना, उघाड़ना, उतावला।

(5) औ (बुरा / हीन / निषेध):- औगुण, औसर, औघट, औघड़, औचक, औसर, औतार, औचक, औढर।

(6) उन (एक कम):- उन्नीस, उनतीस, उनचालीस, उनचास, (उनपचास) उनसठ, उनहत्तर (उनसत्तर) उन्यासी

(7) नि (बड़ा / भिन्न / बिना):- निपूता, निकम्मा, निहत्या, निठल्ला, निगोड़ा, निदान, निडर, निधड़क।

(8) पर (दूसरा):- परहित, परकाज, परदेश, परवरिश, परलोक, परकोटा, परोपकार, पराधीन।

(9) बिन (बिना):- बिनदेखा, बिनामांग, बिनचाहा, बिनव्याहा, बिनखोजा, बिनपाया, बिनसुना, बिनसोचा, बिनखाया।

(10) भर (पूरा/भरा हुआ):- भरपूर, भरकम, भरसक, भरपेट, भरमार, भरपाई।

By Challa Sir

(11) सम (समान):- समकोण, समबाहु, समत्रिभुज, समरूप

(12) दु (दो):- दुपट्टा, दुकाल, दुरंगा, दुपाया, दुधारी, दुगुना, दुमुंह, दूसूता, दुनाली, दुपहिया।

(13) ति (तीन):- तिराहा, तिमाही, तिगुना, तिपाई, तिसेरा, तिरंगा तिकोना, तिबारा।

(14) चौ (चार):- चौराहा, चौमासा, चौगुना, चौपाल, चौकोर, चौखट, चौथाई।

(15) पच (पाँच):- पचकूटा, पचरंगा, पचमेल, पचपन

(16) क/कु (बुरा):- कपूत, कुरुप, कुकर्म, कुमार्ग, कुप्रभाव, कुचाल, कुसमय, कुलक्षण, कुसंगति, कुचक्र।

(17) स / सु (अच्छा/सहित):- सपूत, सकर्म, सगुण, सपरिवार, सरस, सुजान, सुडौल, सुगम।

<u>(3) विदेशी भाषा के उपसर्ग:-</u>

दो भागों में बांटा गया है।

(1) उर्दू , अरबी, फारसी भाषा के उपसर्ग:-

(2) अंग्रेजी भाषा के उपसर्ग:-

<u>(1) उर्दू/अरबी/फारसी भाषा के उपसर्ग:-</u>

(1) ब/बा (सहित):- बकौल, बखूबी, बाकायदा, बाइज्जत, बतौर, बदौलत, बनाम, बाअदब, बामुलाहिजा, बाजवता।

(2) बे (रहित):- बेअदब, बेअसर, बेअसर, बेपरवाह, बेगुनाह, बेगम, बेसहारा, बेशक, बेतकल्लुफ, बेईमान, बेरहम, बेसुध, बेबुनियाद, बेशुमार, बेवफा, बेरोजगार, बेचारा, बेपनाह।

By Chalia Sir

(3) बिला (बिना):- बिलाकानून, बिलावजह, बिलाकसूर, बिलातकल्लूफ, बिलाशक, विलाशर्त, बिलाइरादा।

(4) बद (बुरा):- बदनसीब, बदसूरत, बदकिस्मत, बदहजमी,

बदगुमान, बदचलन, बदबू, बदजुबान, बदतमीज, बदमिजाज, बदनियत, बदनीयत, बदहाल, बदनाम।

(5) खुश (अच्छा):- खुशहाल, खुशनुमा, खुशनसीब, खुशमिजाज, खुशबू, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशदिल

(6) गैरः (दूसरा):- गैर मर्द गैरभौरत, गैरजगह, गैरयाबाद, गैर कौम गैरकानूनी, गैरहाजिर, गैर सरकारी

(7) ना (नहीं):- नापाक, नादान, नाकाम, नाकाबिल, नामुमकिन, नामुराद, नामुनासिक, नासमझ, नालायक, नाजायज।

(8) सर (मुख्य / श्रेष्ठ / प्रधान):- सरकार, सरदार, सरपंच, सरताज, सरहद, सरनाम.

(9) हम (समान /साथ):- हमशक्ल, हमउम्र, हमराही, हमदर्द, हमनिवाला, हमसफर, हमवतन. हमदम

(10) फ़ी (प्रत्येक):- फ़ी आदमी, फ़ी मैदान, फ़ी औरत।

(11) ला (नहीं/बिना):- लाइलाज, लापरवाह, लापता, लाजवाब, लावारिस, लाचार, लाजिमी।

(12) दर (में):- दरकिनार, दरहकीकत, दरमियान, दरअसल, दरखास्त, दरबदर, दरकार, दरबार, दरगाह।

(13) कम (घोडा):- कमउम्र, कमअक्ल, कमबख्त, कमसिन, कमजोर, कमसमझ, कमखर्च।

(14) हर (प्रत्येक):- हरआदमी, हरबार, हरऔरत, हरघड़ी, हरतरफ, हरदम, हररोज, हरवक्त, हरसाल

(15) ऐन (ठीक):- ऐनवक्त, ऐनमौका, ऐनजगह, ऐनआदमी।

By Chalia Sir

(16) अल (निश्चित):- अलमस्त, अलबेला, अलगरज, अलविदा, अलबत्ता, अलकायदा।

(17) नेक - नेकदिल, नेकनियत, नेकराह

(2) अंग्रेजी भाषा के उपसर्ग:-

(1) हैड (मुख्य):- हैडमास्टर, हैडक्लर्क, हैडऑफिस, हैडक्वार्टर, हैड कमेटी, हैड कॉनिस्टेबल

(2) हाफ (आधा):- हाफशर्ट, हाफमाइन्ड, हाफडे, हाफटाइम, हाफमैड, हाफटिकट, हाफप्लेट।

(3) सब (उप):- सबइंस्पेक्टर, सबकमेटी, सबरजिस्ट्रार, सब- जज, सब-डिवीजन।

(4) डिप्टी (सहायक): डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी मिनिस्टर, डिप्टी डायरेक्टर।

(5) चीफ (मुख्य):- चीफ मिनिस्टर, चीफ सेक्रेटरी, चीफ इंजीनियर चीफ जज, चीफ जस्टिस

(6) वाइस (उप / सहायक):- वाइस प्रेसीडेंट, वाइसप्रिंसीपल, वाइस कैप्टन, वाइस चांसलर, वाइस चैयरमैन

YouTube Channel:- Chalia Smart Study By Chalia Sir

By Chalia Sir

प्रत्यय

परिभाषाः- वे शब्दांश जो किसी शब्द की अंत में जुड़कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देती हैं प्रत्यक्ष कहलाते हैं।

✓प्रत्यय की विशेषताएंः-

(i) ये शब्दांश होते है।

(ii) इनका कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है।

(iii) यह किसी शब्द के अंत में जुड़ते हैं और उसके अर्थ को प्रभावित कर देते हैं।

(iv) इनमें संधि नियम लागू नहीं होता है।

✓प्रत्यय के दो भेद होते हैंः-

(1) कृत् / कृदंत प्रत्यय

(2) तध्दित प्रत्यय

(1) कृत / कृदंत प्रत्ययः-

जब किसी क्रिया या मूल धातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग क्रिया जाता है तो उससे बनने वाला यौगिक शब्द कृत् /

कृदन्त प्रत्यय में कहलाता है- जैसेः-

• पढ़ + आकूः- पढ़ाकू। • घूम + भावः- घुमाव (घूमना)

✓कृत / कृदन्त प्रत्यय के भेदः- पाँच भेद होते है।

(1) कर्तावाचक कृदन्त प्रत्यय

(2) कर्मवाचक कृदन्त प्रत्यय

(3) करण वाचक कृदन्त प्रत्यय

(4) भाववाचक कृदन्त प्रत्यय

(5) क्रिया बोधक कृदन्त प्रत्यय

By Chalia Sir

(1) कर्तावाचक कृदन्त प्रत्ययः- जब किसी क्रिया या मूल धातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है, और वह कर्ता के अर्थ का बोध कराए कर्तावाचक कृदन्त प्रत्यय कहलाता है- जैसेः-

• लड़ाकू - लड़ + आकू • (पढ़ना) पढ़ + आकू - पढ़ाकू

• तैराक - तैर + अक • घुमक्कड - घूम + अक्कड़

• पियक्कड़ - पी + अक्कड़ • भुलक्कड़ - भूल + अक्कड़

• गायक - गा (गै) + अक • धाव (धौ) + अक - धावक

• लेखक - लिख (लेख) + अक • वाचक - वाच + अक

• कूदना (क्रिया) - कूद + अक्कड़ - कुदक्कड़

• सड़ियल - सड़ + इयल • मरियल - मर + इयल

• खिलाड़ी (खेलना) - खेल + आड़ी

• कबाड़ी - कबाड़ + आड़ी • पालनहार - पालन + हार

• कमेरा - कमा + एरा • टिकाऊ - टिक + आऊ

• बिकाऊ - बिक + आऊ • लुटेरा - लूट + एरा

• चाखनहार - चाख (चाखन) + हार

• पालनहार - पाल (पालन) + हार

• तारनहार - तार (तारन) + हार • होनहार - होन + हार

• नायक - नै (ना) + अक • गायक - गै (गा) + अक

(ii) कर्मवाचक कृदंत प्रत्ययः-

वे प्रत्यय जो क्रिया में जुड़कर कर्म के अर्थ को प्रकट करते हैं, कर्मवाचक कृदंत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे -

• छलनी - छल + नी • ओढ़नी - ओढ़ + नी

• मथनी - मथ + नी • बिलौनी - बिलौ + नी

• सूंघनी - सूंघ + नी • चटनी - चाट + नी

• सूंघना से सुंघनी , कहना से कहानी

By Challa Sir

(iii) करण वाचक कृदन्त प्रत्ययः-

जब किसी क्रिया या मूल धातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह साधन / करण (से) के अर्थ का बोध कराए, करणवाचक कृदन्त प्रत्यय कहलाता है-

जैसे :-

• चलनी - चल + नी • बेलन - बेल + अन

• कतरनी - कतर + नी • फूंकनी - फूंक + नी

• झूला - झूल + आ • लेखनी - लिख (लेख) + नी

• झाड़ू - झाड़ + ऊ • खुरचन - खुरच + अन

• ढक्कन - ढक + अन • ढेला - ढेल + आ

आ- झूलना से झूला, ठेलने से ठेला

नी- कतरना से कतरनी

(iv) भाववाचक कृदन्त प्रत्ययः-

जब किसी क्रिया या धातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और यह भाव के अर्थ का बोध कराए भाववाचक कृदन्त प्रत्यय कहलाता है-

जैसेः-

• लड़ाई - लड़ + आई • पढ़ाई - पढ़ + आई

• थकावट - थक + आवट • घबराहट - घबरा + आहट

• मुस्कराहट - मुस्करा + आवट • मिलावट - मिल + आवट

• चिकनाहट - चिकना + आहट • चुनाव - चुन + आव

• घुमाव - घूम - आव • समझौता - समझ + औता

आ- पूजना से पूजा, धड़कन से धड़का, जोड़ना से जोड़ा

आई- लड़ना से लड़ाई, काटना से कटाई, सिलना से सिलाई

आव- चढ़ने से चढ़ाव, घुमाव, कटाव, बहाव, टिकाव

ई - बोली, धमकी, हंसी

By Chalia Sir

(v) क्रियाबोधक कृदंत प्रत्ययः-

वे प्रत्यय जो किसी धातु के अंत में जुड़कर क्रिया शब्दों का बोध करते हैं, क्रियाबोधक प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे- लिखता हुआ, पढ़ता हुआ, खाता हुआ, सोते हुए, रोते हुए, पीते हुए।

• पढ़ + कर - पढ़कर • खा + कर - खाकर

• हँस + कर - हँसकर • रो + कर - रोकर

[2] तद्धित प्रत्ययः-

जब किसी संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए तो उससे बनने वाला यौगिक शब्द तद्धित प्रत्यय कहलाता हैं-

जैसेः- लोहा + आर - लुहार • सोना + आर - सुनार

⇒ तद्धित प्रत्यय के छह भेद होते हैंः-

(1) कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय

(2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय

(3) सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय

(4) अपत्यवाचक / सन्तानबोधक तद्धित प्रत्यय

(5) ऊनता / हीनता / लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय

(6) स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय

(1) कर्तावाचक तद्धित प्रत्ययः-

जब किसी संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाता किया जाए तो उससे बनने वाले रूप कर्ता के अर्थ का बोध कथाएं, कर्तावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

• स्वर्ण + कार - स्वर्णकार • कुंभ + कार - कुंभकार

• हत्या + आरा - हत्यारा • जयपुर + इया - जयपुरिया

• कसेरा - काँसा + एरा • घास + एरा - घसेरा

By Chalia Sir

• चित्त + एरा - चितेरा • लकड़ + हारा - लकड़हारा

• आर- सोना से सुनार, कह से कहार, कुंभ से कुम्हार, गांव से गँवार

• आरा- घास से घसियारा, हत्या से हत्यारा, मच्छ से मछुआरा

• एरा- लाख से लखेरा, घास से घसेरा, सांप से सपेरा, चित्र से चितेरा, घन से घनेरा

• आरी- भीख से भिखारी, पूजा से पुजारी

• वान- गाड़ीवान, कोचवान

• हार/हारा- लकड़हारा, पनिहार, मनिहार, भूमिहार, पनिहारा

• इया- रस से रसिया, छल से छलिया, ढोलक से ढोलकिया, दुख से दुखिया, रसोई से रसोइया

• वाला- फलवाला, सब्जीवाला, दूधवाला

• ई- तेल से तेली, भेद से भेदी

• कार- संगीतकार, शिल्पकार, फिल्मकार, स्वर्णकार

(2) भाववाचक तद्धित प्रत्ययः-

वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों में प्रयुक्त होकर भाववाचक संज्ञा शब्दों का निर्माण करते हैं-

• लड़का + पन - लड़कपन • बूढ़ा + आपा - बुढ़ापा

• अच्छा + आई - अच्छाई • मीठा + आस - मिठास

• बेईमान + ई - बेईमानी • दोस्त' + ई - दोस्ती

• गरीब + ई - गरीबी • अहम् + कार - अहंकार

• अपना + पन - अपनापन • बच्चा + पन - बचपन

• बुरा + आई - बुराई • खट्टा + आस - खटास

• ईमानदार + ई - ईमानदारी • अमीर + ई - अमीरी

• आई - पंडित से पंडिताई, ठाकुर से ठकुराई, बुरा से बुराई, भला से भलाई, चतुर से चतुराई, साफ से सफाई, सच से सच्चाई

• आपा - बुढ़ापा, मोटापा

• आस - खट्टा से खटास, मीठा से मिठास

By Chalia Sir

• इमा - लाल से लालिमा, हरित से हरीतिमा, पूर्ण से पूर्णिमा, गुरु से गरिमा

• आका - धम से धमाका, भड़ से भड़का, सन से सनाका

• आहट - कड़वाहट, गर्माहट, चिकनाहट

• ई - खुशी, गर्मी, चोरी, लाली

• अक - ठंडक, विषयक, चिकित्सक

• इम - अंतिम, पश्चिम

• गी - सादा से सादगी, जिंदा से जिंदगी

• अत - रंग से रंगत

• त्व - पुरुषत्व, गुरुत्व, व्यक्तित्व, सुंदरता, मित्रता, व्यवस्था

• इकी - भूत से भौतिक, यंत्र से यांत्रिकी, संख्या से सांख्यिकी

• य - सुंदर से सौंदर्य, ईश्वर से ऐश्वर्य, निराशा से नैराश्य, ललित से लालित्य, चतुर से चातुर्य, लवण से लावण्य, पंडित से पाण्डित्य, महात्मा से माहात्म्य, मधुर से माधुर्य, विधवा से वैधव्य, चेतना से चैतन्य पश्चात से पाश्चात्य

नोट- 'य/इक/अ' प्रत्यय के नियमः-

• किसी शब्द में 'य/इक/अ' प्रत्यय जोड़ने पर उसके प्रथम वर्ण की मात्राएं निम्नानुसार बदल जाती है-

अ/आ - आ

इ/ई/ए - ऐ

उ/ऊ/ओ - औ

• 'य' प्रत्यय से तुरंत पहले वाला वर्ण स्वर रहित हो जायेगा।

(3) अपत्यावाचक / सत्तानबोधक तद्धित प्रत्ययः-

जब किसी संज्ञा के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह सन्तान के अर्थ का बोध कराए अर्थात उत्पन्न होने के अर्थ का बोध कराए अपत्यावाचक / सन्तान बोधक तद्धित प्रत्यय कहलाता है -

जैसेः- मनु + अ - मानव • जनक + ई - जानकी

• दशरथ + ई - दाशरथि • राधा + एय - राधेय (कर्ण)

• भगिनी + एय - भागिनेय • शिव + अ - शैव

By Chalia Sir

• वत्सल + य - वात्सल्य • वल्मीक + इ - वाल्मीकि

• पांडु + अ - पाँडव • कृतिका + एय - कार्तिकेय

• अ- मनु से मानव, रघु से राघव, यदु से यादव पांडू से पांडव, वसुदेव से वासुदेव, विष्णु से वैष्णव, शिव से शैव

ई- पर्वत से पार्वती, विदेह से वैदेही, पांचाल से पांचाली

(4) संबंधवाचक तद्धित प्रत्ययः-

जब किसी संज्ञा के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह सम्बन्ध के अर्थ का बोध कराए सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाता हैं-

जैसेः-

• चाचा + एरा - चचेरा • मामा + एरा - ममेरा

• नाना (ननिह) + आल - ननिहाल • ससुर + आल - ससुराल

• मौसी + एरा - मौसेरा • फूफा + एरा - फुफेरा

• समाज + इक - सामाजिक • दहे + इक - दैहिक

• भारत + ईय - भारतीय • विचार + इक - वैचारिक

• परिवार + इक - पारिवारिक • वेद + इक - वैदिक

• एरा- मामा से ममेरा, फूफा से फुफेरा, मौसा से मौसेरा, चाचा से चचेरा, काका से ककेरा

• आल- ससुर से ससुराल, नानी से ननिहाल दादी से ददिहाल

• जा/जी- भानजा, भानजी

• ओई - ननदोई, बहनोई

• आ- ठंड से ठंडा, प्यार से प्यार, भूख से भूखा

• मान- मूर्तिमान, शक्तिमान, बुद्धिमान

(5) ऊनता / हीनता / लघुतावाचक तद्धित प्रत्ययः-

जब किसी संज्ञा के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह बड़े से छोटे रूप का बोध कराए, उनता / हीनता / लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाता है-

जैसेः-

By Challa Sir

• बाबू + आ - बबुआ • कालू + आ - कलुआ

• घड़ा + ई - घड़ी • चिमटा + ई - चिमटी

• पहाड़ + ई - पहाड़ी • मण्डल + ई - मण्डली

• मटका + ई - मटकी • नाला + ई - नाली

• घंटा + ई - घंटी • बेटी + इया - बिटिया

• सांप + ओला - सपोला • हथौड़ा + ई - हथौड़ी

• खार + इया - खरिया • अच्छा + सा - अच्छासा

• छोरा + सा - छोटासा • लाल + सी - लालसी

• लोटा + इया - लुटिया • खोट + ओला - खटोला

• बड़ा + सा - बड़ासा

• इया- खाट से खटिया, चोटी से चुटिया, बेटी से बिटिया, डिब्बा से डिबिया, लोटा से लुटिया, आम से अमिया, कुटी से कुटिया,

• इसका - पत्र से पत्रिका, काली से कालिका, लता से लतिका

• ली- ढ़प से ढपली, टीका से टिकली, सूत से सुतली

• की - ढोल से ढोलकी

• ई - कुआं से कुंई, टोकरा से टोकरी, नाल से नाली

• री - कोठा से कोठरी, छाता से छतरी

• ड़ी - पंख से पंखुड़ी, आंत से अंतड़ी

(6) स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय :-

जब किसी संज्ञा / सर्वनाम / विशेषण के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह स्त्री जाति के अर्थ का बोध कराए तो स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय कहलाता हैं:-

जैसेः-

• सुत + आ - सुता • अनुज + आ - अनुजा

• प्रिय + आ - प्रिया • छात्र + आ - छात्रा

• ठाकुर + आइन - ठकुराइन • चौधरी + आइन - चौधराइन

By Chalia Sir

- पंडित + आइन - पंडिताइन
- शेर + नी - शेरनी
- मुंशी + आइन - मुंशियाइन
- ऊँट + नी - ऊँटनी
- नटन + नी - नटनी
- जाट + नी - जाटनी
- मोर + नी - मोरनी
- पति + नी - पत्नी
- कुम्हार + इन - कुम्हारिन
- पड़ोसी + इन - पड़ोसिन
- पुजारी + इन - पुजारिन
- बाघ + इन - बाघिन
- सुहार + इन - लुहारिन
- मालिक + इन - मालकिन
- कुत्ता + इया - कुतिया
- बंदर + इया - बंदरिया
- चूहा + इया - चुहिया
- चिड़ा + इया - चिड़िया
- आइन- ठकुराइन, पंडिताइन, चौधराइन
- इनी- वाहिनी, कमलिनी, भुजंगिनी
- नी- मोरनी, शेरनी, नटनी
- आनी - देवरानी, इंद्राणी, नौकरानी, जेठानी, सेठानी
- इया - कुत्तिया, बंदरिया
- ई - देवी, चाची, बेटी
- आ - सता, अनुजा, प्रिया, शिष्या

By Chalia Sir

YouTube Channel:- Chalia Smart Study By Chalia Sir

<u>समास</u>

• समास शब्द का शाब्दिक अर्थः- संक्षेप/ छोटा रूप

• समास शब्द की रचना सम् + आस से मिलकर हुई है।

सम् का अर्थ है - पास तथा आस का अर्थ है - आना या बैठना

✓ परिभाषाः- जब दो या दो से अधिक शब्द अपने बीच की विभक्तियों का लोप कर जो छोटा रूप बनते है, उसे समास / सामासिक शब्द कहते हैं।

अथवा

दो या दो से अधिक पदों के परस्पर मेल को ही समास कहते हैं।

✓ समास विग्रहः- परस्पर जुड़े हुए पदों को अलग करने की रीति को समास विग्रह कहते हैं -

जैसेः- रेल पर चलने वाली गाड़ी - रेलगाड़ी

दही में डूबा हुआ बड़ा - दहीबड़ा

✓ समास के भेदः- छह भेद होते हैं।

(1) अव्ययीभाव समास

(2) तत्पुरुष समास

(3) द्विगु समास

(4) कर्मधारय समास

(5) द्वंद्व समास

(6) बहुव्रीहि समास

<u>[1] अव्ययीभाव समासः-</u>

जिस समस्त पद में पूर्व पद प्रधान होता है तथा समस्त पद अव्यय का बोध कराता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

अव्ययी भाव समास की विशेषताः-

By Chalia Sir

(i) इसका प्रथम पद प्रधान होता है।

(ii) उपसर्ग युक्त पद होते है।

(iii) इसमे प्रथमपद अध्यय होता है।

(iv) पुनरावृत्ति शब्दों का प्रयोग होता है।

(i) प्रथम पद प्रधान / प्रथम पद अव्ययः-

• यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार

• यथानुसार - जैसा है उसी के अनुसार

• यथाक्रम - क्रम के अनुसार

• यथायोग्य - योग्यता के अनुसार

• यावज्जीवन - जीवन रहने तक

• भरसक - सक भर (सामर्थ्य के अनुसार)

• भरपेट - पेट भरकर

• सकुशल - कुशलता के साथ

• सप्रमाण - प्रमाण के सहित

• सानुज - अनुज के साथ

• सबांधव - बांधव (भाई) के साथ

• हरवर्ष - प्रत्येक वर्ष

• सपत्नीक - पत्नी के साथ

• सावधान - अवधान के साथ

• हरमाह - प्रत्येक माह

(2) उपसर्ग युक्त पद

• अत्यधिक - अधिक से अधिक

• अत्याधुनिक - आधुनिक से पथिक

By Chalia Sir

• अनुक्रम - क्रम के अनुसार

• अनुगमन - गमन के पीछे गमन

• आकंठ - कंठ तक

• आजीवन - जीवन रहने तक

• आबालवृद्ध - बाल से वृद्धतक

• आमरण - मरण तक

• नियंत्रण - पूर्ण रूप से यंत्रण

• निर्विकार - विकार से रहित

• निमंत्रण - विशेष रूप से मंत्रण

• निर्विवाद - विवाद से रहित

• नीरस - रस से रहित

• नीरंध्र - रंध्र (छिद्र / रोम) से रहित

• नीरव - रव (ध्वनि) से रहित

• आजानुबाहु - घुटनों से भुजाओं तक

• आपादमस्तक - पैरों से सिर तक

• प्रत्युपकार - उपकार के बदले उपकार

• समक्ष - अक्षि के सामने

• दरअसल - असल में

• दरहकीकत - हकीकत में

By Chalia Sir

(3) पुनरावृत्ति शब्दः-

• घर - घर - प्रत्येक घर

• रातोंरात - रात ही रात में

• बारम्बार - हर बार

• चलाचली - चलने के बाद चलना

• हाथोंहाथ - हाथ ही हाथ में

• सालोंसाल - साल के बाद साल

• भागमभाग - भागने के बाद भागना

• टालमटाल - टालने के बाद टालना

• लुटमलूट - लूटने के बाद लूटना

• कभी न कभी - कभी में से कभी

• कुछ न कुछ - कुछ में से कुछ

[2] तत्पुरुष समास :-

जिस समस्त पद में दूसरा पद (उत्तर पद) प्रधान होता है अर्थात विभक्ति का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

✓ तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद होते हैं-

1. लुप्त कारक चिह्न तत्पुरुष -

• कर्म तत्पुरुष

• करण तत्पुरुष

• संप्रदान तत्पुरुष

• अपादान तत्पुरुष

• संबंध पुरुष

• अधिकरण तत्पुरुष

2. समानाधिकरण तत्पुरुष -

• अलूक् तत्पुरुष

• नञ तत्पुरुष

• उपपद तत्पुरुष

• लुप्त पद तत्पुरुष

By Chalia Sir

1. लुप्त कारक तत्पुरुष :-

लुप्त कारक तत्पुरुष में दोनों पदों के बीच आने वाले कारक चिह्न "को, से, के द्वारा, का, के, की, में, पर आदि कारक चिह्न का लोप हो जाता है। विग्रह करते समय इन कारक चिह्नओं को पुनः जोड देते हैं।

✓ इनकी संख्या 6 है

(1) कर्म तत्पुरुष - (को)

• आत्मविस्मृत - आत्मा को विस्मृत करने वाला

• जेबकतरा - जेब को कतरने वाला

• अग्निभक्षी - अग्नि को भक्षित करने वाला

• शत्रुघ्न - शत्रु को मारने वाला

• जलधर - जल को धारण करने वाला

• दुखद - दुख को देने वाला

• गगनचुंबी - गगन को चूमने वाला

• मनोहर - मन को हरने वाला

• चित्तचोर - चित को चुराने वाला

• चिड़ीमार - चिड़िया का करने वाला

• शरणागत - शरण को आगत आया हुआ

• मुंहतोड़ - मुह को तोड़ने वाला

• गिरहकट - गिरह (जेब) को काटने वाला

• स्वर्गप्राप्त - स्वर्ग को प्राप्त

• कमरतोड़ - कमर को तोड़ने वाला

• विद्याधर - विद्या को धारण करने वाला

• विदेशगमन - विदेश को गमन

• हस्तगत- हस्त को गत (गया हुआ)

• सर्वज्ञ - सर्व (सब) को ज्ञ (जानने वाला)

• नरभक्षी - नर का भक्षण करने वाला

By Chalia Sir

• कृष्णार्पण - कृष्ण को अर्पण

• नेत्र सुखद - नेत्रों को सुखद

• जेबकतरा - जेब को कतरने वाला

• प्राप्तोदक - उदक को प्राप्त

• विरोधजनक - विरोध को जन्म देने वाला

• यशप्राप्त - यश को प्राप्त

(2) करण तत्पुरुष - से (जुड़ने के अर्थ में), के द्वारा

• धर्मांध - धर्म से अंधा

• ईश्वर प्रदत्त - ईश्वर से प्रदत्त

• हस्तलिखित - हस्त से लिखित

• तुलसीकृत -तुलसी द्वारा कृत

• दयार्द - दया से आर्द्र

• रत्नजड़ित - रतन से जडित

• जानयुक्त - ज्ञान से युक्त

• विधिप्रदत्त - विधि के द्वारा प्रदत्त

• गुणयुक्त - गुण से युक्त

• रेलयात्रा - रेल से यात्रा

• रेखांकित - रेखा से अंकित

• शोकाकुल - शोक से आकुल

• वाक्युद्ध - वाक् (वाणी) से युद्ध

• पददलित - पद से दलित

• धर्मयुक्त-धर्म से युक्त

• महिमामंडित महिमा से मंदित

• श्रमजीवी - श्रम से जीवित रहने वाला

By Chalia Sir

• तारोंभरी- तारों से भरी

• मनगढंत - मन से गढ़ा हुआ

• जलावृत - जल से आवृत्त

• अश्रुपूर्ण - अश्रु से पूर्ण

• देवविचरित - देवाओं के द्वारा विचरित

• रसभरी - रस से भरी

• बिहारीरचित - बिहारी के द्वारा रचित

<u>(3) सम्प्रदान तत्पुरुष (के लिए)-</u>

इस समास में दो पदों के बीच प्रयुक्त कारक चिह्न 'के लिए' का लोक हो जाता है इसलिए से संप्रदान तत्पुरुष समास कहते हैं।

• गुरुदक्षिणा - गुरु के लिए दक्षिणा

• गोशाला - गायों के लिए शाला

• हवन सामग्री - हवन के लिए सामग्री

• विद्यालय - विद्या के लिए आलय

• बलिपशु - बलि के लिए पशु

• मालगोदाम - माल के लिए गोदाम

• पुत्रशोक - पुत्र के लिए शोक

• सचिवालय - सचिवों के लिए आलय

• भिक्षाटन - भिक्षा के लिए अटन

• प्रयोगशाला - प्रयोग के लिए शाला

• सत्याग्रह - सत्य के लिए आग्रह

• मंत्रालय - मंत्रणा के लिए आलय

• शिवार्पण - शिव के लिए अर्पण

• धर्मशाला - धर्म के लिए शाला

• लोकसभा - लोक के लिए सभा

By Chalia Sir

• स्नानघर - स्नान के लिए घर

• सभाभवन - सभा के लिए भवन

• विधानसभा - विधान के लिए सभा

• हवन सामग्री - हवन के लिए सामग्री

• गुरु दक्षिणा - गुरु के लिए दक्षिणा

• आवेदनपत्र - आवेदन के लिए पत्र

• हथकड़ी - हाथ के लिए कड़ी

• रणभूमि - रण के लिए भूमि

• गौशाला - गायों के लिए शाला

• पुस्तकालय - पुस्तकों के लिए आलय

• रनिवास - रानियों के लिए वास

• सभा मंडप - सभा के लिए मंडप

• कारावास - (कारा) कैदी के लिए आवास

• देवालय - देव के लिए आलय

• छात्रावास - छात्र-छात्राओं के लिए आवास

• भूतबलि - भूतों के लिए बलि

• कन्याविद्यालय - कन्याओं के लिए विद्यालय

• देशभक्ति - देश के लिए भक्ति

• राहखर्च - राह के लिए खर्च

• रेलभाड़ा - रेल के लिए भाड़ा

By Chalia Sir

(4) अपादान तत्पुरुषः- से (अलग होने के अर्थ में)

इस समास में दो पदों के बीच प्रयुक्त 'से' कारक चिह्न का लोप हो जाता है इसलिए से अपादान तत्पुरुष समास कहते हैं।

(लेकिन यहां से अलग होने का बोध करता है)

• मार्ग भ्रष्ट - मार्ग से भ्रष्ट

• ऋण मुक्त - ऋण से मुक्त

• पदच्युत - पद से च्युत

• धर्म विमुख - धर्म से विमुख

• देश निकाला - देश से निकला

• लक्ष्य भ्रष्ट - लक्ष्य से भ्रष्ट

• व्ययमुक्त - व्यय से मुक्त

•मायारिक्त - माया से रिक्त

• श्रमरहित - श्रम से रहित

• क्रियाहीन - क्रिया से हीन

• रसहीन - रस से होन

• कामचोर - काम से जी चुराने वाला

• जलशून्य - जल से शून्य

• नेत्रहीन - नेत्रों से हीन

• ऋणमुक्त - ऋण से मुक्त

• गर्वशून्य - गर्व से शून्य

• इंद्रीयातीत - इंद्रियों से अतीत

• सेवानिवृत - सेवा से निवृत्त

• आकाशपतित - आकाश से पतित

• मृत्युभय - मृत्यु से भय

• पापमुक्त - पाप से मुक्त

• सेवा मुक्त - सेवा से मुक्त

• जन्मांध - जन्म से अंधा

• आशातीत - आशा से अतीत (परे)

• विद्याहीन - विद्या से हीन

By Chalia Sir

(5) संबंध तत्पुरुषः- (का, के, की)

इस समास में दोनों पदों के बीच प्रयुक्त कारक चिह्न ' का, की, की' का लोप हो जाता है, जो संबंध के अर्थ का बोध कराते हैं इसलिए इस संबंध तत्पुरुष समास कहते हैं -

- रामचरित - राम का चरित
- मंत्रिपरिषद - मंत्रियों की परिषद
- आमचूर्ण - आम का चूर्ण
- घुड़दौड़ - घोड़ो की दौड़
- भारत रत्न - भारत का रत्न
- आमरस - आम का रस
- आत्महत्या - आत्म की हत्या
- राजमाता - राजा की माता
- सेहराबंधाई - सेहरा बाँधने की रस्म में (भेंट)
- कान बिंधाई - कान बींधने की मजदूरी
- सभापति - सभा का पति
- जमींदार - जमीन का दार (स्वामी)
- सेनापति - सेना का पति
- राजदूत - राजा का दूत
- नियमावली - नियमों की अवली
- सौरमंडल - सूर्य का मंडल
- मातृभाषा - माता की भाषा
- कन्यादान - कन्या का दान
- राजसभा - राजा की सभा
- प्राणाहुति - प्राणों की आहुति
- नरबलि - नर की बलि
- विश्वासपात्र - विश्वास का पात्र

By Chalia Sir

• रक्तदान - रक्त का दान

• ग्रामोत्थान - ग्राम का उत्थान

• चरित्र चित्रण - चरित्र का चित्रण

• नगर सेठ - नगर का सेठ

• नगर पालिका - नगर की पालिका

• वनमाली - वन का माली

• यदुवंश - यदु का वंश

• जननायक - जनों का नायक

• दावानल - दाव (जंगल) की अनल (आग)

• जलाशय - जल का आशय

• ऋषि कन्या - ऋषि की कन्या

(6) अधिकरण तत्पुरुष समासः- में, पर

इस समास में दोनों पदों के बीच प्रयुक्त कारक "में / पर" का लोप हो जाता है इसलिए इसे अधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैंः-

जैसेः-

• आनंदमग्न - आनंद में मग्न

• वनवास - वन में वास

• जीवदया - जीवो पर दया

• ध्यानमग्न- ध्यान में मगन

• घुड़सवार - घोड़े पर सवार

• घृतान्न - घी में पक्का अन्न

• विषयासक्त - विषयों में आसक्त

• शास्त्र प्रवीण - शास्त्रों में प्रवीण

• कार्य कुशल - कार्य में कुशल

• क्षत्रियाधम - क्षत्रियों में अधम

By Chalia Sir

• गृह प्रवेश - ग्रह में प्रवेश

• कलाप्रवीण - कलाओं में प्रवीण

• क्षणभंगुर - क्षण में भंगर होने वाला

• जगबीती - जग पर बीती हुई

• कविपुंगव - कवियों में पुंगव (श्रेष्ठ)

• नीति निपुण - नीति में निपुण

• फलासक्त - फल में आसक्त

• नराधम - नरों में अधम

• शिलालेख - शिला पर लेख

• हरफनमौला - हरफन (कला) में मौला (उस्ताद)

• मुनिश्रेष्ठ - मुनियों में श्रेष्ठ

नरोत्तम - नरों में उत्तम

• सिरदर्द - सिर में दर्द

• रणवीर - रण में वीर

• ऋषिराज - ऋषियों में राजा

• सर्वोत्तम - सर्व में उत्तम

• जलमग्न - जल में मग्न

• लोकप्रिय - लोक में प्रिय

• काव्यनिपुण - काव्य में निपुण

• आत्मकेंद्रित - आत्म पर केंद्रित

• वनवास - वन में वास

• पर्वतारोहण - पर्वत पर आरोहण

• ईश्वराधीन - ईश्वर पर अधीन

• आपबीती - आप पर बीती हुई

By Chalia Sir

2. समानाधिकरण तत्पुरुषः-

✓ अलुक तत्पुरुष समासः- इस समास में दोनों पदों के बीच संस्कृत की विभक्ति उपस्थित रहती है, इसलिए इसे अलुक तत्पुरुष समास कहते है -

• वसुंधरा - वसुओ को धारण करने वाली धरा

• मनसिज - मन में सृजित होने वाला

• वाचस्पति - वाणी का पति

• अंतेवासी (अन्ते+वासी) - समीप में वास करने वाला

• युधिष्ठिर - युद्ध में स्थिर रहने वाला

• धनंजय (धनम् जय) - धन को जय करने वाला

• वनेचर (वने+चर) - वन में विचरण करने वाला

• धुरंधर - धर्म दूरी को धारण करने वाला।

• खेचर (खे+चर) - आकाश में विचरण करने वाला

✓ नञ तत्पुरुष समासः- इस समास में पूर्वपद अ, अन्, अन, न, ना आदि उपसर्ग होते है जो नकारात्मक अर्थ प्रकट करते है -

• असत्य - सत्य नहीं

• असभ्य - नहीं है सभ्य जो

• अनपढ़ - पढ़ा - लिखा नहीं

• अनासक्त - आसक्ति से रहित

• अनसन - असन (भोजन) से रहित

• नापाक - नहीं है पाक

• नापसंद - नहीं है पसंद जो

• नालायक - नहीं है लायक जो

• नागवार - नहीं है गवारा (मंजूर) जो

• अकाल - काल नहीं

• अनश्वर - न नश्वर होने वाला

By Chalia Sir

• अव्यय - न व्यय होने वाला

• अमिट - न मिटने वाला

• अधीर - न धीर रखने वाला

• अमर - न मरने वाला

✓ उपपद तत्परुष समासः- जब समस्त पद में उत्तर पद कोई स्वतंत्र सार्थक शब्द न होकर कोई प्रत्यय होता है, तब उपपद तत्पुरुष समास होता है-

• पादप - पाद (पैर) से पीने वाला

• खग - ख (आकाश) में गमन करने वाला

• स्वर्णकार - स्वर्ण का काम करने वाला

• चर्मकार - चर्म का काम करने वाला

• नभचर - नभ में विचरण करने वाला

• कृतज्ञ - उपकार को मानने वाला

• लाभप्रद - लाभ को प्रदान करने वाला

• सुखदाई - सुख को देने वाला

• शक्ति दायक - शक्ति को देने वाला

• जलचर - जल में विचरण करने वाला

• सुनार - सोने का काम करने वाला

✓ लुप्तपद तत्पुरुष -

जब किसी समस्त पद में कारकीय चिह्नओं के साथ-साथ अन्य पद भी लुप्त हो जाते हैं, तब लुप्त पद तत्पुरुष समास माना जाता है।

• रसगुल्ला - रस में डूबा हुआ गुल्ला दही बडा- दही में डूबा हुआ बड़ा

• पवन चक्की - पवन से चलने वाली चक्की

By Chalia Sir

• कन्यादान - कन्या के पिता द्वारा श्रेष्ठ वर को घर बुलाकर

• विधिपूर्वक दिया जाने वाला कन्या का दान

• पर्णशाला - पर्ण (पत्तों) से बनी हुई शाला

• वनमानुष - वन में रहने वाला मानुष

• बैलगाडी - बैलों से चलने वाली गाड़ी

• जलखुम्भी - जल में उत्पन्न होने वाली खुबी

• रेलगाडी - रेल पर चलने वाली गाडी

• तुलादान - तुला से बराबर कर दिया जाने वाला दान

• नरबलि - नर की बलि

• काक बलि - काक के लिए बलि

[3] कर्मधारय समासः- 'दूसरा पद प्रधान'

इस समास में विशेषण और विशेष्य अर्थात उपमान और उपमेय के अर्थ का बोध होता है-

✓ विशेषण / उपमानः-

संज्ञा / सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द अर्थात जो विशेषता बताई जाती है, उसे विशेषण कहते है. विशेषण को ही उपमान भी कहा जाता हैं।

✓ विशेष्य / उपमेयः-

विशेषण / उपमान के द्वारा जिसकी विशेषता बतलाई जाती है उसे विशेष्य कहते है विशेष्य को ही उपमेय भी कहा जाता है।

• मृगनयनी - मृग के नयनों के समान नयनों बाली

• चंद्रमुखी - चन्द्रमा के समान सुंदर मुख वाली

• उड़न खटोला - उड़ता है जो खटोला

विशेषण विशेष्य

• मधुमक्खी - मधु को एकत्र करने वाली मक्खी

By Chalia Sir

• उड़न तश्तरी - उड़ती है जो तश्तरी

• महर्षि - महान् है जो ऋषि

• तुषार धवल - बर्फ के समान है जो सफेद

• देवर्षि - देव है जो ऋषि है

• राजर्षि - राजा है जो ऋषि है

• कुकर्म - कुत्सित (बुरा) है जो कर्म

• कुमार्ग - कुत्सित (बुरा) है जो मार्ग

• कृष्ण सर्प - कृष्ण (काला) हैं जो सर्प

• मंदबुद्धि - मंद है जिसकी बुद्धि

• महाकवि - महान् है जो कवि

• पीताम्बर -पीले है जो वस्त्र

• खड़ी बोली - खड़ी है जो बोली

• सुशासन - सुष्ठु (अच्छा) है जो शासन

• तीव्रदृष्टि - तीव्र है जिसकी दृष्टि

• महापुरुष - महान् है जो पुरुष

• श्वेताम्बर - श्वेत (सफेद) है जो अम्बर (वस्त्र)

• घनश्याम - काले हैं जो बादल

• नीलोत्पल - नीला है जो उत्पल (कमल)

• उदयाचल - उदय होता है जिस अचल (पर्वत) से

• अस्ताचल - अस्त होता है जिस अचल (पर्वत) में

• भलामानुष - भला है जो मानुष

• वीरबाला - वीर है जो बाला

• बहरूपिया - बहुत है जिसके रूप

• शिष्टाचार - शिष्ट है जिसका आचार (व्यवहार)

• सद्भावना - सत् (श्रेष्ठ) है जिसकी भावना

By Chalia Sir

• रक्तलोचन - रक्त (लाल) है जो लोचन (नेत्र)

• सुपाच्य - सुष्ठु (अच्छा) है जो पचने में

• सुबोध - सु (अच्छा) है जिसका बोध (ज्ञान)

• हताशा - हत है जिसकी भागा

• रक्ताम्बुज - रक्त (लाल) है जो अम्बुज (कमल)

• दीनाराम - दिनों के हैं जो राम

• रामदिन - राम है जो दीनों को

• पुरुषोत्तम - उत्तम है जो पुरुष (पुरुषों में है जो उत्तम)

• पुरुषों में है जो उत्तम - कर्मधारय समास

• पुरुषों में उत्तम - अधिकरण तत्पुरुष समास

• पुरुषों में उत्तम है जो - बहुव्रीहि समास

• प्रभूदयाल - दयालु है जो प्रभु

• लाल-लाल - अत्यंत लाल

• हरा-हरा - अत्यंत हरा

• पीला- जर्द - जोपीला है जो ज़र्द (पीला) है

• लाल-सुर्ख - जो लाल हैं जो सुर्ख है / अत्यंत लाल

• खट्टा-मीठा - जो खाटा है जो मीठा हैं

• भला-बुरा - जो भला है जो बुरा है

• शीतोष्ण - जो शीत है जो ऊष्ण

• गोरागट्ट - अत्यधिक गोरा

• हरा-कच्च - अत्यधिक हरा

• सफेद-फक्क - अत्यधिक सफेद

[4] द्विगु समासः- ' दूसरा पद प्रधान '

इस समास का प्रथम पद संख्यावाची होता है और सम्पूर्ण पद मिलकर किसी समूह का बोध कराता है -

By Chalia Sir

जैसेः-

• एकांकी - एक अंक (दृश्य) का नाटक

• दुनाली - दो नाल वाली

• दुगुना - दो बार गुना

• दुपहर - दो पहर के बाद का समय

• तिराहा - तीन राहों का समाहार

• तिरंगा - तीन रंगों का समूह

• त्रिकोण - तीन कोणों का समूह

• त्रिमूर्ति - तीन मूर्तियों का समूह

• चवन्नी - चार आनों का समूह

• चौपाया - चार पैरों का समूह

• चौपाई - चार पैर वाली

• द्विगु - दो गायों का समूह

• दुधारी - दो धारों से युक्त

• दुपट्टा - दो पटों का समूह

• दुपहिया - दो हैं पहिए जिसके

• तिमाही - तीन माहों का समूह

• त्रिफला - तीन फलों का मिश्रण

• त्रिवेणी - तीन वेणियों (नदियों) का संगम

• चौराहा - चार राहों का समाहार

• चौमासा - चार मासों का समूह

• चतुर्वेदी - चार वेदों का ज्ञाता

• चतुर्भुज - चार भुजाओं का समूह

• पंचतंत्र - पाँच तत्रों का समूह

• पंचवटी - पाँच वट वृक्षों का समूह

By Chalia Sir

• पंजाब - पाँच आबों (नदियों) का समूह

• षडानन - छह आननों का समूह

• षड्रस - छह रसों का समूह

• सप्तपदी - सात पदों का समूह

• अठन्नी - आठ आनों का समूह

• नवरात्र - नौ विशेष रात्रियों का समूह

• सतसई - सात सौ दोहों का समूह

• पंचरंगा - पांच रंगों का समूह

• पंचपात्र - पांच पत्रों का समूह

• पंचामृत - पांच अमृतों का समूह

• सप्ताह - सप्त (सात) अहनो (दिनों) का समूह

• नवग्रह - नौ ग्रहों का समूह

• दशाब्दी - दस वर्षों का समूह

विशेषः- एक से लेकर दस और दस से भाज्य संख्याओं में द्विगु समास होता है।

[5] द्वंद्व समासः- "दोनों पद प्रधान"

इस समास के दोनों पद समान प्रधानता रखते है, इसके इसको तीन भागों में बांटा जा सकता है-

1. इतरेतर द्वंद्व - और

2. समाहार द्वन्द - आदि/इत्यादि

3. वैकल्पिक द्वंद्व - या / अथवा

(i) इतरेतर द्वंद्वः- "और "

जैसेः-

• कृष्णार्जुन - कृष्ण और अर्जुन

• राधेश्याम - राधा और श्याम

By Chalia Sir

• सीताराम - सीता और राम

• हरिहर - हरि (विष्णु) और हर (महादेव)

• दूध-रोटी - दूध और रोटी

• अहर्निश - अहन् और निशा

• दाल-बाटी - दाल और बाटी

• दाल-बाटी-चूरमा - दाल बाटी, चूरमा इत्यादि

• पढ़ा-लिखा - पढ़ा और लिखा

• नमक-मिर्ची - नमक और मिर्च

• हर्षोल्लास - हर्ष और उल्लास

• फल-फूल - फल और फूल

• फल-फूल-मेवा-मिष्टान्न - फल. फूल, मेवा और मिष्टान्न

• माता-पिता - माता और पिता

• लव-कुश - लव और कुश

• धनुर्बाण - धनुष और बाण

• अड़सठ - आठ और साठ

• तिरसठ - तीन और साठ

• पैसठ - पाँच और साठ

• पचपन - पांच और पचास

• इकतीस - एक और तीस

• पच्चीस - पाँच और बीस

विशेषः- एक से लेकर दस और दस से भाज्य संख्याओं को छोड़कर तथा उन उपसर्ग वाली संख्यायों को छोड़कर बाकी सभी में इतरेतर द्वन्द्व समास होता है।

(ii) समाहार द्वंद्वः- "आदि/इत्यादि

इस समास में किसी अन्य संज्ञा का बोध छिपा रहता है अर्थात दोनों पदों के साथ-साथ अन्य पदों का बोध भी

By Chalia Sir

छिपा रहता है, इसलिए इसे समाहार द्वन्द्व समास कहते है -

जैसेः-

• जीव-जन्तु - जीव, जन्तु आदि

• धन-दौलत - धन, दौलत आदि

• पेड़-पौधे - पेड.,पौधे आदि

• नोन-तेल - नोन, तेल आदि

• आटा-दाल - आटा, दाल आदि

• बाल - बच्चा - बाल, बच्चा आदि

• मेल - मिलाप - मेल, मिलाप आदि

• चाय-वाय - चाय आदि

• पानी-बानी - पानी आदि

• रोटी-बोटी - रोटी आदि

• आटा-दाल - आटा दाल आदि

• मेल-मिलाप - मेल, मिलाप आदि

• अड़ोस-पड़ोस - पड़ोस आदि

• आमने-सामने - सामने आदि

• थाली-वाली - थाली आदि

विशेषः- जब समास विग्रह में दो के लिए आये तो आदि लगेगा और दो से अधिक आने पर इत्यादि लगता है।

By Chalia Sir

(iii) वैकल्पिक द्वंद्व समास - "या/ अथवा "

इस समास में विलोम शब्द प्रयोग किए जाते हैं, इसलिए इसे वैकल्पिक द्वंद्व समास कहते हैं- जैसे-

• लाभ-हानि - लाभ या हानि

• थोड़ा-बहुत - थोड़ा या बहुत

• सुख-दुःख - सुख या दुःख

• धर्माधर्म - धर्म या अधर्म

• पाप-पुण्य - पाप या पुण्य

• लाभालाभ - लाभ या अलाभ

• देवासुर - देव या असुर

• साक-पात - साक या पात

• जात-कुजात - जात या कुजात

• कर्तव्याकर्तव्य - कर्तव्य या अकर्तव्य

• सत्यासत्य - सत्य या असत्य

[6] बहुव्रीहि समासः- "अन्य पद प्रधान"

बहुव्रीहि समास का अर्थ - किसान

• त्रिफला - तीन फलों का मिश्रण है जो - चूर्ण

✓ बहुव्रीहि समास का कोई भी पद प्रधान नहीं होता बल्कि अन्य पद की प्रधानता का बोध होता है,जैसेः-

• लम्बोदर - लम्बा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् (गणेश)

• आशुतोष - शीघ्र ही प्रसन्न होने वाला है जो (शिव)

• कपीश - कवियों (बंदरों) का ईश्वर है जो अर्थात् (हनुमान)

• अब्जनाग - नाभि में अब्ज (कमल) है जिसके अर्थात् (विष्णु)

• उमेश - उमा का ईश है जो अर्थात् (शिव)

• अनंग - बिना अंगों के है जो अर्थात् (कामदेव)

• अयोध्यानंदन - अयोध्या का नंदन है जो अर्थात् (कृष्ण)

• ब्रजनंदन - ब्रज का नंदन है जो अर्थात् (कृष्ण)

• रेवतीरमण - रेवती के साथ रमण करते है जो अर्थात् (बलराम)

• रोहिणीनंदन - रोहिणी के नंदन है जो अर्थात् (बलराम)

• गिरिजा- गिरि (पहाड़) से जन्मी है जो अर्थात् (पार्वती)

• लोहागढ़ - लोहे के समान अजेय गढ़ है अर्थात् (भरतपुर का किला)

• चन्द्रमौलि - चन्द्र है मौलि (मस्तक) पर जिसके अर्थात् (शिव)

By Chalia Sir

• वज्रांग - वज्र के हैं अंग जिसके अर्थात् (हनुमान)

• नकटा - कटी हुई है नाक जिसकी अर्थात् (बेशर्म)

• ऊटपटांग - अँट पर टाँग अर्थात् (बेतुका)

• श्रीश - श्री (लक्ष्मी) के ईश है जो अर्थात् (विष्णु)

• गुडाकेश - गुडाका (नींद) का है ईश (ईश्वर) जो अर्थात (अर्जुन/ शिव)

• तीस-मार-खाँ - तीस को मारकर खाता है जो अर्थात् (महान शूरवीर)

• आजानुबाहु - घुटनों तक लम्बी हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात् (राम)

• दोआब - दो आबों (नदियों) के बीच का भाग है जो (आर्यो की उत्पति का स्थान)

• हरफनमौला - हर फन (कला) में मौला (ज्ञाता) है जो अर्थात् (दक्ष) • हैदराबाद - हैदर अली द्वारा आाबाद (बसाया) किया गया है जिसको अर्थात् ,(शहर विशेष)

YouTube Channel:- Chalia Smart Study By Chalia Sir

By Chalia Sir

सन्धि

अर्थः- सन्धि का शाब्दिक अर्थ है - मेल या समझौता

परिभाषाः- दो या दो से अधिक वर्णों के मिलने से उत्पन्न विकार ही संधि कहलाता है।

नोटः- यदि वर्णों के मेल होने पर परिवर्तन नहीं होता है, तो इसे संधि नहीं संयोग कहते हैं।

भेद/प्रकार :-

संधि तीन प्रकार की होती है-

1. स्वर सन्धि (स्वर + स्वर)

2. व्यंजन सन्धि (स्वर + व्यंजन्) (व्यंजन + स्वर) (व्यंजन + व्यंजन)

3. विसर्ग सन्धि (विसर्ग + स्वर) (विसर्ग + व्यंजन)

1. स्वर सन्धि :- दो स्वरों की मेल से उत्पन्न होने वाले विकार को स्वर संधि कहते हैं।

स्वरः- हिंदी में 11 स्वर होते हैं- अ, आ, इ, ई, उ,ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

• इन स्वरों को दो भागों में बांटा जाता है-

(अ) ह्रस्व - जिनके उच्चारण में कम समय लगता है। इनकी संख्या चार हैः- अ, इ, उ, ऋ।

(ब) दीर्घ स्वर - इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगना समय लगता है। इनकी संख्या 7 होती हैः- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

• स्वर संधि के पांच भेद होते हैंः-

1. दीर्घ स्वर सन्धि

2. गुण स्वर सन्धि

3. वृद्धि स्वर सन्धि

4. यण स्वर सन्धि

5. अयादि स्वर सन्धि

By Chalia Sir

[1] दीर्घ स्वर सन्धिः-

जब दो समान / सजातीय हस्व व दीर्घ के मिलने पर उनका दीर्घ रूप हो जाता है, वहां दीर्घ स्वर संधि होती है।

जैसे- अ, आ के बाद अ, आ आने पर उसका दीर्घ रूप आ हो जाता है। उदाहरण देखिये-

• सूत्र- अ/आ+अ/आ = आ

अ+अ = आ

नयन + अभिराम = नयनाभिराम, चरण + अमृत = चरणामृत, परम + अर्थ = परमार्थ, स + अवधान = सावधान,

धर्म + अर्थ = धर्मार्थ, वेद + अंत = वेदांत, दीप + अवली = दीपावली, देह + अंत = देहांत, सूर्य + अस्त = सूर्यास्त,

धर्म + अधर्म = धर्माधर्म, पर + अधीन = पराधीन, मुर + अरि = मुरारि, गीत + अंजलि = गीतांजलि,

विकल + अंग = विकलांग, राम + अर्जुन = रामार्जुन

अ+आ = आ

देव + आलय = देवालय, सत्य + आग्रह = सत्याग्रह, रत्न + आकर = रत्नाकर, कुश + आसन = कुशासन,

हिम + आलय = हिमालय, देव + आनंद = देवानंद, राम + आधार = रामाधार, परम + आनंद = परमानंद,

परम + आत्मा = परमात्मा, शरण + आगत = शरणागत, भोजन + आलय = भोजनालय,

आ+अ = आ

कक्षा + अध्यापक = कक्षाध्यापक, श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजति, सभा + अध्यक्ष = सभाध्यक्ष, माया + अधीन =

मायाधीन, कदा + अपि = कदापि, विद्या + अनुराग = विद्यानुराग, दीक्षा + अंत = दीक्षान्त, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

विद्या + आलय = विद्यालय, महा + आशय = महाशय, दया + आनंद = दयानन्द, वार्ता + आलाप = वार्तालाप

• इ/ई + इ/ई = ई

रवि + इंद्र = रवीन्द्र, अभि + इष्ट = अभिष्ट, अति + इव = अतीव, मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र

हरि + ईश = हरीश, परि + ईक्षा = परीक्षा, गिरि + ईश = गिरीश, वारि + ईश = वारीश, कपि + ईश = कपीश

By Chalia Sir

ई + इ = ई

महो + इंद्र = महीन्द्र, लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा, देवी + इच्छा = देवीच्छा,

ई + ई = ई

नारी + ईश्वर = नारीश्वर, जानकी + ईश = जानकीश, सती + ईश = सतीश, मही + ईश = महीश, नदी + ईश्वर = नदीश्वर,

योगी + ईश्वर = योगीश्वर, रजनी + ईश = रजनीश, गौरी + ईश = गौरीश

सूत्रः- उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

उ + उ = ऊ

लघु + उत्तर = लघुत्तर, कटु + उक्ति = कटूक्ति, गुरु + उपदेश = गुरुपदेश, सु + उक्ति = सूक्ति, लघु + उत्तम = लघूत्तम,

साधु + उपदेश = साधूपदेश, भानु + उदय = भानूदय

उ + ऊ = ऊ

धातु + ऊष्मा = धातूष्मा, सिंधु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि, बहु + ऊर्जा = बहूर्जा

ऊ + उ = ऊ

वधू + उत्सव = वधूत्सव

ऊ + ऊ = ऊ

भू + ऊष्मा = भूष्मा, सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि, वधू + ऊर्जा = वधूर्जा,

[2] गुण स्वर सन्धि –

अ / आ के साथ इ / ई के मेल से ए,

अ / आ के साथ उ / ऊ के मेल से ओ,

अ/ आ के साथ ऋ के मेल से अर् बनता है, इसे गुण संधि कहते हैं।

• सूत्र - अ / आ + इ + ई = ए

सुर + इंद्र = सुरेन्द्र, स्व + इच्छा = सवेच्छा, न + इति = नेति, भारत + इंदु = भारतेन्दु, नर + इंद्र = नरेंद्र,

By Chalia Sir

बाल + इंदु = बालेंदु, मानव + इंद्र = मानवेन्द्र, प्र + इत = प्रेत, नर + ईश = नरेश, सुर + ईश = सुरेश, गण + ईश = गणेश, सर्व + ईक्षण = सर्वेक्षण, कमल + ईश = कमलेश, प्र + ईक्षक = प्रेक्षक, सिद्ध + ईश्वर = सिद्धेश्वर, महा + इंद्र = महेन्द्र, यथा + इच्छा = यथेच्छा, राजा + इंद्र = राजेंद्र, यथा + इष्ट = यथेष्ट, रमा + ईश = रमेश, मिथिला + ईश = मिथिलेश, राका + ईश = राकेश, द्वारका + ईश = द्वारकेश, महा + ईश = महेश, गुड़ाका + ईश = गुड़ाकेश,

• सूत्रः- अ / आ + उ / ऊ = ओ

पर + उपकार = परोपकार, सूर्य + उदय = सूर्योदय, नील + उत्पल = निलोत्पल, देश + उपकार = देशोपकार, सह + उदर = सहोदर, जन्म + उत्सव = जन्मोत्सव, स + उदाहरण = सोदाहरण, चंद्र + उदय = चंन्द्रोदय ज्ञान + उदय = ज्ञानोदय, मंद + उदरी = मंदोदरी, वीर + उचित = वीरोचित, सर्व + उदय = सर्वोदय, भाग्य + उदय = भाग्योदय, हत + उत्साह = हतोत्साह, नव + उदित = नवोदित, प्र + उज्ज्वल = प्रोज्ज्वल, अंत्य + उदय = अंत्योदय, जल + ऊर्मि = जलोर्मि, जल + ऊर्जा = जलोर्जा, नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा, सागर + ऊर्मि = सागरोर्मि, महा + उदय = महोदय, यथा + उचित = यथोचित, सारदा + उपासक = शारदोपासक, महा + उत्सव = महोत्सव, गंगा + उदक = गंगोदक, महा + उपकार = महोपकार, गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि, यमुना + ऊर्मि = यमुनोर्मि, महा + ऊर्जा = महोर्जा

• सूत्रः- अ/आ + ऋ = अर्

देव + ऋषि = देवर्षि, उत्तम + ऋण = उत्तमर्ण, ग्रीष्म + ऋतू = ग्रीष्मर्तु, राजा + ऋषि = राजर्षि, ब्रम्हा + ऋषि = ब्रम्हर्षि

[3] वृद्धि स्वर सन्धिः--

अ /आ के साथ ए / ऐ के मेल से 'ऐ' अ / आ के साथ ओ / और के मेल से 'औ' बनता है, इसे वृद्धि स्वर सन्धि कहते है।

• सूत्रः- अ/आ + ए / ऐ = ऐ

मत + एक्य = मतैक्य, मत + एषणा = मतैष्णा, हित + एषी = हितैषी, तथा + एव = तथैव, पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा, एक + एक = एकैक, विश्व + एकता = विश्वैक्ता, ज्ञान + ऐश्वर्य = जानैश्वर्य, मत + ऐक्य = मतैक्य, सदा + एव = सदैव, बसुधा + एव = वसूधैव, तथा + एव = तथैव, महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य,

By Chalia Sir

• सूत्रः- अ / आ + ओ / औ = औ

दूध + ओदन = दूधौदन, जल + ओघ = जलौघ, भाव + औचित्य = भावौचित्य, परम + ओज = परमौज,

महा + ओज = महौज, गंगा + ओघ = गंगौघ, वन + औषध = वनौषध, तप + औदार्य = तपौदार्य,

महा + औषधि = महौषधि,

[4] यण स्वर सन्धिः-

'इ / ई' के बाद भिन्न स्वर आने पर इ/ई के स्थान पर 'य्', 'उ/ऊ' का अन्य स्वर का मेल होने से 'उ / ऊ' का 'व्', 'ऋ' के साथ अन्य स्वर का मेल होने पर ऋ का 'र्', 'लृ' के बाद भिन्न स्वर आने पर लृ का 'ल्' बन जाता है, इसे यण् सन्धि कहते हैं।

• सूत्रः- इ / ई + भिन्न स्वर हो तो इ / ई का 'य' हो जाता है।

अति + अधिक = अत्यधिक, अति + आचार = अत्याचार, अति + अल्प = अत्यल्प, अधि + अक्ष = अध्यक्ष,

गति + अवरोध = गत्यवरोध, वि + अवहार = व्यवहार, यदि + अपि = यद्यपि, इति + आदि = इत्यादि, परि + आवरण

पर्यावरण, अभि + आगत = अभ्यागत, वि + आयाम = व्यायाम, परि + आप्त = पर्याप्त, अभि + उदय = अभ्युदय,

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर, उपरि + उक्त = उपर्युक्त, नि + ऊन = न्यून, अधि + ऊढ़ा = अध्यूढ़ा, नदी + अर्पण = नद्यर्पण,

देवी + आगमन = देव्यागमन, नदी + आमुख = नद्यामुख, वाणी + उचित = वाण्युचित, वि + असन = व्यसन,

परि + अटन = पर्यटन, प्रति + एक = प्रत्येक, वि + अस्त = व्यस्त

• सूत्रः- उ / ऊ + भिन्न स्वर हो तो उ / ऊ का 'व' हो जाता है।

अनु + अय = अन्वय, मधु + अरि = मध्वरि, तनु + अंगी = तंवंगी, सु + अल्प = स्वल्प, सु + अच्छ = स्वच्छ,

गुरु + आज्ञा = गुर्वाजा, भानु + आगमन = भान्वागमन, सु + आगत = स्वागत, मधु + आलय = मध्वालय,

साधु + आचरण = साध्वाचरण, अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण, अनु + ईक्षक = अन्वीक्षक, अनु + ईक्षा = अन्वीक्षा,

अनु + एषन = अन्वेषन, वधू + आगमन = वध्वागमन,

• सूत्रः- ऋ + असमान स्वर = ऋ का 'र'

पितृ + आदेश = पित्रादेश, मातृ + आदेश = मात्रादेश, पितृ + आलय = पित्रालय, मातृ + आलय = मात्रालय,

By Chaia Sir

पितृ + उपदेश = पित्रुपदेश, मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश, मातृ + अनुमति = मात्रनुमति, पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

[5] अयादि स्वर सन्धिः--

यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर आ जाये तो इनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् बन जाता है, इसे अयादि स्वर सन्धि कहते है।

• सूत्रः- ए + स्वर हो तो ए का अय् हो जाता है।

विने + अ = विनय, चे + अन = चयन, जे + अ = जय, ने + अन = नयन, शे + अन = शयन

• सूत्रः- ऐ + स्वर हो तो ऐ का आय् हो जाता है।

नै + अक = नायक, गै + अक = गायक, गै + अन = गायन, दै + अक = दायक, विधै + अक = विधायक,

तिनै + अक = विनायक, गै + इका = गायिका, नै + इका = नायिका

• सूत्रः- ओ + भिन्न स्वर हो तो ओ का अव् हो जाता है।

भो + अन = भवन, हो + अन = हवन, पो + अन = पवन, पो + इत्र = पवित्र, गो + एषणा = गवेषणा,

गो + यह = गव्य, श्रो + अन = श्रवण

• सूत्रः- औ + भिन्न स्वर हो तो औ का आव् हो जाता है।

पौ + अन = पावन, पौ + अक = पावक, श्री + अक = श्रावक, धौ + अक = धावक, भौ + उक = भावुक,

भौ + अना = भावना, नौ + इक = नाविक, धौ + अंक = धावक, प्रसंग + इका = प्रसाविका

[2] व्यंजन सन्धि

"व्यंजन का स्वर से या व्यंजन से व्यंजन का योग होने पर उत्पन्न विकार को ही व्यंजन संधि कहते है!"

जैसेः- सत् + जन = सज्जन।

• व्यंजन संधि के नियम निम्नलिखित हैः-

By Chalia Sir

(नियम-1):- किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद यदि कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण तथा "य, र, ल, व, ह,' में से कोई आ जाए तो 'क्' के स्थान पर 'ग्', 'च्' के स्थान पर 'ज्' 'ट्' के स्थान पर 'ड्', 'त्, के स्थान पर 'द्' तथा 'प्' स्थान पर 'ब्' बन जाएगा।

• सूत्रः- क् / च् /ट् / त् / प् + किसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण /य, र, ल, व

ग् / ज् / ड् / द् / ब् हो जाता है।

दिक् + अम्बर = दिगम्बर, वाक् + ईश = वागीश, दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन, दिक् + गज = दिग्गज,

वाक् + देवता = वाग्देवता, प्राक् + वाट = प्राग्वाट, अच् + अंत = अजन्त, षट् + आनन = षडानन, षट् + यन्त्र = षडयंत्र,

षट् + दर्शन = षड्दर्शन, षट् + विकार = षड्विकार, षट् + अंग = षडंग, सत् + आचार = सदाचार, उत् + यान = उद्यान,

तत् + उपरांत = तदुपरान्त, सत् + आशय = सदाशय, उत् + घाटन = उद्घाटन, जगत् + अम्बा = जगदम्बा,

अप् + ज = अब्ज ।

(नियम 2):- यदि वर्ग के प्रथम वर्ण क् च् ट् त् प् के बाद कोई पाँचवा वर्ण आ जाए तो क् /च् /ट् / त् / प् का अपने ही वर्ग नासिक्य वर्ण (वर्ग का पंचम वर्ण) में बदल जाएगा।

• सूत्रः- क् /च् /ट् / त् / प् + ङ् / ञ् / ण् / न् /म् = ङ् / ञ् / ण् / न् / म्

वाक् + मय = वाङ्मय, दिक् + नाग = दिङ्नाग, याच् + ना = याञ्ना, ष्ट + मुख = षण्मुख, उत् + नति = उन्नति,

उत्+ नायक = उन्नायक, उत् + मूलन = उन्मूलन, जगत् + नाथ = जगन्नाथ, जगत् + माता = जगन्माता,

तत् + मय = तन्मय,

(नियम 3):- म् के साथ क से म तक किसी भी वर्ण के मेल होने पर म् के स्थान पर अनुस्वार (अं) आ जायेगा।

सम् + कल्प = संकल्प, सम् + ख्या = संख्या, सम् + गम = संगम, सम् + घर्ष = संघर्ष, अलम् + कार = अलंकार,

शम् + कर = शंकर, सम् + गठन = संगठन, सम् + चय = संचय, किम् + चित = किंचित, दम् + ड = दंड,

सम् + तोष = संतोष, किम् + नर = किन्नर, सम् + देह = संदेह, सम् + ताप = संताप, सम् + पूर्ण = सम्पूर्ण,

सम् + भव = संभव, सम् ,+ भावना = संभावना, सम् + जीवन = संजीवन, सम् + चालन = संचालन।

By Chalia Sir

नोटः- इसके कुछ अपवाद भी हैः- सम् + करण = संस्करण, सम् + कृत = संस्कृत, सम् + कार = संस्कार,

सम् + कृति = संस्कृति

(नियम 4)ः- म् के साथ य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से किसी भी वर्ण के मेल से 'म्' के स्थान पर 'अनुस्वार' ही आएगा।

सम् + योग = संयोग, सम् + रचना = संरचना, सम् / लग्न = संलग्न, सम् + वत = संवत, सम् + शय = संशय,

सम् + हार = संहार, सम् + योजना = संयोजना, सम् + विधान = संविधान, सम् + श्लेषण = संश्लेषण

(नियम 5)ः- त् / द् + च / छ

'च्'

उत् + चारण = उच्चारण, शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र, उत् + छिन्न = उच्छिन, जगत् + जीवन = जगज्जीवन

(नियम 6)ः- त् / द् + ज /झ

'ज्'

सत् + जन = सज्जन, जगत् + जीवन = जगज्जीवन, उत् + ज्वल = उज्ज्वल, विपत् + जाल = विपज्जाल,

यावत् + जीवन = यावज्जीवन, जगत् + जननी = जगज्जननी

(नियम 7)ः- त् / द् + ट / ठ

'ट्'

तत् + टीका = तट्टीका, वृहत् + टीका = वृहट्टीका

(नियम 8)ः- त् / द् + ड / ढ

'ड्'

उत् + डयन = उड्डयन

By Chalia Sir

(नियम 9):- त् / द् + ल

'ल्'

उत् + लंघन = उल्लंघन, उत् + लेख = उल्लेख, उत् + लास = उल्लास, तत् + लीन = तल्लीन

YouTube Channel:- Chalia Smart Study By Chalia Sir

(नियम 10):- त् / द् + ह

द् ध

उत् + हार = उद्धार, पद् + हति = पद्धति, तत् + हित = तद्धित, उत् + हरण = उद्धरण

(नियम 11):- त् / द् + श

च् छ

उत् + श्वास = उच्छवास, उत् + शृखंल = उच्छखल, उत् + शिष्ट = उच्छशिष्ट

(नियम-12):- किसी भी स्वर के साथ छ के मेल पर स्वर तथा छ के बीच च् का आगमन हो जाता है।

आ + छादन = आच्छादन, अनु + छेद = अनुच्छेद, स्व + छंद = स्वच्छन्द, परि + छेद = परिच्छेद,

तरु + छाया = तरुच्छाया, एक + छत्र = एकच्छत्र

(नियम-13):- अ, आ के अतिरिक्त अन्य किसी स्वर का स के साथ मेल होने पर 'स' का 'श' बन जाएगा।

वि + सम = विषम, अभि + सिक्त = अभिषिक्त, अनु + संग = अनुषन्ग, अभि + सेक = अभिषेक, सु + सुप्त = सुषुप्त,

नि + सेध = निषेध, वि + साद = विषाद, सु + स्मिता = सुष्मिता, परि + सद = परिषद, सु + समा = सुषमा

अपवाद:- वि + सर्ग = विसर्ग, अनु + सार = अनुसार, वि + सर्जन = विसर्जन, वि + स्मरण = विस्मरण

(नियम 14):- र / ऋ ष् + न्

'ण'

राम + अयन = रामायण, परि + नाम = परिणाम, मृत् +। मय = मृण्मय, क्रीड़ा + अंगन = क्रीड़ागण,

By Chalia Sir

(नियम 15):- इ / उ / ए / ऐ + स्थ / स्न

ष्ठ स्न्

वि + स्नु = विष्णु, वि + स्था = विष्ठा, प्रति + स्था = प्रतिष्ठा, युधि + स्थिर = युधिष्ठिर, नि + स्नात = निष्णात,

(नियम 16):- द् + क् / ख् / त् / थ् / प् / फ् / स्

'त्'

सद् + कार = सत्कार, संसद् + सदस्य = सन्सत्सदस्य, तद् + पर = तत्पर, विपद् + काल = विपत्काल,

तद् + काल = तत्काल, शरद् + काल = शरत्काल, उद् + खनन = उत्खनन उद् + तम = उत्तम, उद् + तर = उत्तर,

तद् + पुरुष = तत्पुरुष, तद् + क्षण = तत्क्षण

[3] विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

जैसेः- निः + अक्षर = निरक्षर।

• विसर्ग संधि के महत्वपूर्ण नियम-

नियम 1. (उत्व सन्धि) अ + विसर्ग + किसी वर्ण का तीसरा, चौथा, पांचवा वर्ण या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

पुरः + हित = पुरोहित, अधः + पतन = अधोपतन, मनः + व्यथा = मनोव्यथा, पयः + द = पयोद, रजः + मय = रजोमय,

तिरः + हित = तिरोहित, अधः + लिखित = अधोलिखित, पुरः + धा = पुरोधा, वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध, पयः + ज = पयोज,

यशः + गाथा = यशोगाथा, तपः + बल = तपोबल, मनः + रथ = मनोरथ, अधः + वस्त्र = अधोवस्त्र, मनः + बल = मनोबल,

तपः + बल = तपोबल, मनः + दशा = मनोदशा, मनः + रथ = मनोरथ, पयः + धर = पयोधर, सरः + ज = सरोज,

मनः + योग = मनोयोग, यशः + गान = यशोगान, सरः + वर = सरोवर, अधः + लोक = अधोलोक,

मनः + अभिलाषा = मनोभिलाषाषा, यशः + धरा = यशोधरा, मनः + रंजन = मनोरंजन ।

By Chalia Sir

नियम 2. (रुत्व सन्धि) :- यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर अन्य कोई स्वर हो और उसके बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पांचवा वर्ण या य, र, ल, व या स्वर में से कोई एक वर्ण आ जाए तो विसर्ग (:) का 'र्' बन जाता है-

निः + गुण = निर्गुण, निः + जन = निर्जन, निः + आशा = निराशा, निः + अपराध = निरपराध, दुः + बोध = दुर्बोध, दुः + अवस्था = दुरवस्था, दुः + बुद्धि = दुर्बुद्धि, बहिः + गमन = बहिर्गमन, बहिः + मुखी = बहिर्मुखी, दुः + उपयोग = दुरुपयोग, दुः + आचार = दुराचार, निः + धन = निर्धन, निः + उपाय = निरुपाय, दुः + गुण = दुर्गुण, दुः + योधन = दुर्योधन, निः + बल = निर्बल, निः + दोष = निर्दोष, धनुः + विद्या = धनुर्विद्या, आशीः + वाद = आशीर्वाद, बहिः + रंग = बहिरंग, आयुः + वेद = आयुर्वेद

अपवादः- पुनः + अवलोकन = पुनरवलोकन, पुनः + ईक्षण = पुनरीक्षण, पुनः + उद्धार = पुनरुद्धार, अंतः + द्वन्द्व = अंतर्द्वन्द्व,

नियम-3 (सत्व सन्धि):- यदि विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और उसके बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श् बन जाता है।

आः + चर्य = आश्चर्य, पुनः + च = पुनश्च, निः + चय = निश्चय, दुः + चरित्र = दुश्चरित्र, निः + छल = निश्छल, तपः + चर्या = तपश्चर्या, हरिः + चंद्र = हरीश्चंद्र, दुः + शासन = दुश्शासन, निः + शुल्क = निश्शुल्क, निः + शंक = निश्शंक

नियम 4. (सत्व सन्धि):- यदि विसर्ग से पहले कोई स्वर हो तथा विसर्ग के बाद ट, ठ, ष हो तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है।

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार, चतुः + टीका = चतुष्टीका

नियम 5. (सत्व सन्धि):- यदि विसर्ग के पहले कोई स्वर हो और उसके बाद त, थ, स में से कोई हो तो विसर्ग का 'स्' बन जाता है।

अंतः + ताप = अंतस्ताप, अंतः + तल = अंतस्थल, निः + ताप = निस्ताप, दुः + तर = दुस्तर, निः + तारण = निस्तारण, निः + तेज = निस्तेज, नमः + ते = नमस्ते, मनः + ताप = मनस्ताप, निः + संदेह = निस्संदेह, दुः + साहस = दुस्साहस, निः + स्वार्थ = निस्स्वार्थ, दुः + स्वप्न = दुस्स्वप्न, निः + संतान = निस्संतान, दुः + साध्य = दुस्साध्य, पुनः + स्मरण = पुंस्स्मरण

By Chalia Sir

नियम. 6.- यदि विसर्ग के पहले वाले वर्ण में अ / आ के अतिरिक्त अन्य कोई स्वर हो तथा विसर्ग के बाद क, ख, प, फ में से कोई भी हो तो विसर्ग के स्थान पर 'ष्' बन जाएगा।

निः + कलंक = निष्कलंक, दुः + कर = दुष्कर, आविः + कार = आविष्कार, चतुः + पथ = चतुष्पथ,

निः + काम = निष्काम, निः + प्रयोजन = निष्प्रयोजन, बहिः + कार = बहिष्कार, निः + कपट = निष्कपट,

ज्योतिः + कण = ज्योतिष्कण, निः + कंटक = निष्कन्टक, पुः + कर = पुष्कर

नियम 7.- यदि विसर्ग के पहले वर्ण में अ या आ स्वर हो तथा विसर्ग के बाद क, ख, प, फ हो तो संधि होने पर भी विसर्ग ज्यों का त्यों बना रहेगा-

अधः + पतन = अधःपतन, प्रातः + काल = प्रातः काल, अंतः + पुर = अंतःपुर, वयः + क्रम = वयःक्रम,

रजः + कण = रजःकण, पयः + पान = पयःपान, अंतः + करण = अंतःकरण,

अपवाद :-

भाः + कर = भास्कर, नमः + कार = नमस्कार, पुरः + कार = पुरस्कार, बृहः + पति = बृहस्पति,

तिरः + कार = तिरस्कार।

नियम 8.- यदि विसर्ग के पहले वाले वर्ण में 'इ' या 'उ' का स्वर हो तथा विसर्ग के बाद 'र 'हो तो इ की मात्रा ई में तथा उ की मात्रा ऊ में बदल जाएगी।

निः + रस = नीरस, निः + रव = नीरव, निः + रोग = निरोग, दुः + राज = दूराज, निः + रज = नीरज, निः + रन्द्र = नीरन्द्र, दुः + रम्य = दूरम्य

नियम 9.- विसर्ग के पहले वाले वर्ण में 'अ' का स्वर हो तथा विसर्ग के साथ अ के अतिरिक्त अन्य किसी स्वर का मेल हो तो विसर्ग का लोप हो जायेगा तथा अन्य कोई परिवर्तन नहीं होगा-

अतः + एव = अतएव, ततः + एव = ततएव, यशः + इच्छा = यशइच्छा, तपः + उत्तम = तपउत्तम

By Chalia Sir

मुहावरें

• हारिल की लकड़ी होना - सदा साथ रहना

वाक्य प्रयोग - आजकल युवाओं के लिए मोबाइल हारिल की लकड़ी हो गया है।

सोते जागते हर समय साथ रहता है।

• काल के बस में होना - मौत के शिकंजे में होना

वाक्य प्रयोग - प्राणी जन्म लेते ही काल के बस में हो जाता है।

• मन में ही रहना - इच्छा पूरी न होना।

वाक्य प्रयोग- नाना जी के अचानक चले जाने के कारण उनसे मिलने की इच्छा मन में ही रह गई।

• मन में चकरी होना - भटकन होना

वाक्य प्रयोग-वे लोग कभी भी अच्छी तरह से पढ़ाई नहीं कर पाते जिनके मन में चकरी होती है।

• राजनीति पढ आना - छल कपट सीखना

वाक्य प्रयोग- विदेश से वकालत पढ़कर लौटे रमेश को देकर ऐसा लगने लगा कि जैसे वह राजनीति पढ़ आया हो।

• फूँक से पहाड़ उड़ाना - काल्पनिक बातें करना

वाक्य प्रयोग- अरे पहलवान ! थोड़ी शक्ति का प्रदर्शन करो, तुम तो यूं ही फूंक से पहाड़ उड़ाना चाहते हो।

• तर्जनी देखकर मर जाना - धमकी से डर जाना

वाक्य प्रयोग- मैंने भी तुम्हारे जैसे कई बड़ बोल देखे हैं। मैं कोई तर्जनी देखकर डरने वालों में से नहीं हूं।

• काल का कवल होना - मर जाना

वाक्य प्रयोग- जो इस संसार में आया है, उसे एक ने एक दिन काल का कवल होना ही है

• काल को हाँक लाना - मौत की स्थिति पैदा करना

वाक्य प्रयोगः-- अरे यूं ही बिना बात के काल को हांक कर लाने में लगे हुए हो

• हरा ही हरा सूझना - सब कुछ अनुकूल दिखाई देना

वाक्य प्रयोग- शादी से पूर्व व्यक्ति को वैवाहिक जीवन के बारे में हरा ही हरा सूझता है।

• माथे काढना - किसी पर गुस्सा उतारना

वाक्य प्रयोग- अरे भाई तुम किसी का गुस्सा मेरे माथे पर क्यों काढ रहे हो।

By Chalia Sir

• गागर रीति होना - कुछ भी सफलता नहीं मिलना

वाक्य प्रयोग- आओं देखें कि तुमने कुछ सीखा भी है या बस गागर रीति ही रह गई है।

• हंसी उड़ाना - कमियों पर हंसना

वाक्य प्रयोग - आजकल हर आदमी दूसरे की हंसी उड़ाने का आकांक्षी रहा है।

• आंखें हटाना - सावधानी हटना

वाक्य प्रयोग- यह बस स्टेशन है, जरा भी आंख हटाओगे तो सामान चोरी हो जाएगा।

• जान डालना - शक्ति और प्रभाव आ जाना

वाक्य प्रयोग - तुम्हारे द्वारा लिखित संवादों ने इस नाटक में जान ही डाल दी है।

• आंखें चार होना - प्रेम होना

वाक्य प्रयोग- आजकल की युवाओं की दुनिया बड़ी विचित्र है, जैसे ही आखें चार हुई उनके पढ़ाई चौपट हो जाती है।

• आंखें फेर लेना - दृष्टि हटा लेना

वाक्य प्रयोग- पहलवान को अपनी दुर्दशा पर लज्जित होते देखा हमने अपनी आंखें फेर ली।

• चक्कर में पड़ना - किसी काम में लगा

वाक्य प्रयोग - यदि जीवन को सफल बनाना चाहते हो तो खेल और मनोरंजन के चक्कर में ना पढ़ो।

• सब कुछ होम देना - सब कुछ बलिदान कर देना

वाक्य प्रयोग- देशभक्तों ने देश की आजादी के लिए सब कुछ हम दिया

• आंखें भर आना - आँसू आ जाना

वाक्य प्रयोग- आंसुओं में लिपटी मां को देखकर हमारी आंखें भर आई।

• दो टूक बाल करना - साफ-साफ बात करना

वाक्य प्रयोग- आजकल के आदमी में दो टूक बात करने का साहस नहीं रहा।

• झगड़ा मोल लेना - खुद गलती करके झगड़ा बढ़ाना

वाक्य प्रयोग- पता नहीं आजकल तुम छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा क्यों मोल लेते रहते हो।

• तूल देना - व्यर्थ में अधिक महत्व देना

वाक्य प्रयोग- आजकल अखबार वाले हर छोटी-मोटी घटना को व्यर्थ में तूल देते रहते हैं।

• आंखें चुराना - बचने की कोशिश करना

By Chalia Sir

वाक्य प्रयोग - पहले विश्वास देखकर समय पर तुमने आंखें चुरा ली।

• भाप लेना - समझ लेना

वाक्य प्रयोग - अनुभवी लोग बात की हकीकत को तुरंत भाम्प लेते हैं।

• मुंह में पानी आना - खाने के लिए जी ललचाना

वाक्य प्रयोग- गरमा गरम समोसे देखकर किसके मुंह में पानी नहीं आएगा।

• होश संभालना - समझदार होना

वाक्य प्रयोग- उसके होश संभालते ही परिवार की जिम्मेदारी उठा ली

• आग बबूला होना - क्रोधित होना

वाक्य प्रयोग- महेश ने सुरेश की किताब फाड़ दी तो वह आग बबूला हो गया।

• आग लगाना - भड़काना

वाक्य प्रयोग- आजकल विरोधी पार्टी के लोग किसी भी समस्या को लेकर जनता में आग लगाने में नहीं चूकते

• लू उतारना - खरी खोटी सुनाना

वाक्य प्रयोग - शिक्षक ने डंडे से पिटाई करके लड़कों पर अपनी लू उतार ली

• हाशिये पर चले जाना - प्रभाव कम हो जाना

• हाथ लगा - अचानक प्राप्त हो जाना

• गंगा जमुना संस्कृति - मिली जुली संस्कृति

• बाट जोहना - इंतजार करना

• लोटपोट होना - हंस हंस कर दोहरा होना

• नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना

• हाथ में ना आना - पकड़ में नहीं आना

• रोंगटे खड़े होना - बहुत डर जाना

• ठगा सा रह जाना - चकित हो जाना

• आंख का तारा - बहुत प्रिय

• अंगूठा दिखाना - निराश करना/ तिरस्कार पूर्वक मना कर देना

• अक्ल पर पत्थर पड़ना - कुछ समझ में नहीं आना

By Chalia Sir

• आंखें बिछाना - सत्कार करना

• आकाश पाताल एक करना - कठिन प्रयत्न करना

• आसमान सिर पर उठाना - बहुत शोर करना

• ईंट से ईंट बजाना - नष्ट भ्रष्ट कर देना

• ईद का चांद होना - बहुत दिनों बाद दिखाई देना

• उल्टी गंगा बहाना - नियम के विरुद्ध कार्य करना

Chalia Sir

• उल्लू बनाना - मूर्ख बनाना

• उंगली उठाना - लान्छन लगाना

• उंगली पर नचाना - वश में करना

• एक लाठी से हांकना - समान व्यवहार करना

• कीचड़ उछालना - अपमानित करना

• कमर कसना - तैयार हो जाना

• कलेजा मुंह को आना - घबरा जाना

• कान भरना - चुगली करना

YouTube Channel:- Chalia Smart Study

• खून खोलना - बहुत क्रोध आना

• गड़े मुर्दे उखाड़ना - पिछली बुरी बातें याद करना

• गले का हार होना - अत्यंत प्रिय होना

• गागर में सागर भरना - थोड़े में बहुत कुछ कहना

• घी के दीपक जलाना - खुशियां मनाना

• चांदी का जूला मारना - रिश्वत देकर काम निकालना

• चिकना खड़ा होना - अत्यंत बेशर्म होना

• छाती पर मूंग दलना - खूब परेशान करना

• टोपी उछालना - बेज्जती करना

• दांत खट्टे करना - पराजित करना

• दाल में काला होना - शक होना

By Chalia Sir

• दिन रात एक करना - खूब परिश्रम करना

• नमक मिर्च लगाना - बात बढ़ा - चढ़ा करके कहना

• बाल बांका ना होना - कुछ भी नुकसान न होना

• लोहा मानना - बहादुरी स्वीकार करना

• हवा से बातें करना - बहुत तेज दौड़ना

कहावतें (लोकोक्तियां)

• आंख का अंधा नाम नैन सुख - गुणो के विपरीत नाम

• अंधों में काना राजा - मूर्ख में थोड़ा जान वाला भी आदर पाता है।

• अधजल गगरी छलकल जाए - ओछा आदमी थोड़ा गुण या धन होने पर इतराने लगता है।

• आगे कुआं पीछे खाई - सब ओर से मुसीबत में फंसना

• आग लगने पर कुआं खोदना - आवश्यकता पड़ने से पहले कुछ ना करना

• आप बैल मुझे मार - जानबूझकर मुसीबत मोल लेना

• आधा तीतर आधा बटेर - बेमेल चीजों का सम्मिश्रण

• ऊंट के मुंह में जीरा - खाने को बहुत कम मिलना

• ऊंची दुकान फीके पकवान - प्रदर्शन और कोरा दिखावा

• एक अनार सौ बीमार - आपूर्ति की तुलना में मांग अधिक

• एक और एक ग्यारह होते हैं - संगठन में बड़ी शक्ति होती है।

• काला अक्षर भैंस बराबर - बिल्कुल निरक्षर

• का वर्षा जब कृषि सुखाने - हानि हो जाने के बाद उपचार का लाभ व्यर्थ है

• खोदा पहाड़ निकली चुहिया - अधिक परिश्रम पर लाभ कम

• खिसियानी बिल्ली खंबा नोचे - खुद की गलती पर दुसरो पर क्रोध प्रकट करना

By Chalia Sir

• घर का भेदी लंका ढाए - घर वालों की फूट सर्वनाश का कारण बनती है

• मान न मान मैं तेरा मेहमान - जबरदस्ती गले पड़ना।

• यथा राजा तथा प्रजा - जैसा नेता होगा वैसी जनता होगी।

• रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई - सर्वनाश होने पर भी घमण्डी होना।

• विष दे विश्वास न दे - विश्वासघात मृत्यु से भी बुरा होता है।

• साँच को आँच नहीं - सच्चा आदमी नहीं डरता है।

• सावन के अन्धे को हरा ही हरा सूझता है - अपनी सी दशा सबकी समझना।

महत्वपूर्ण निबंध

1. स्वच्छ भारत अभियान
2. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
3. पर्यावरण प्रदूषणः कारण और निवारण
4. बढ़ती महंगाई : एक विकराल समस्या
5. कन्या भ्रूण हत्याः एक जघन्य अपराध।
6. नारी सशक्तिकरण
7. राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान
8. मोबाइल फोन वरदान या अभिशाप
9. राजस्थान के मेले
10. कृत्रिम बुद्धिमता वरदान या अभिशाप
11. समाज का अभिशापः- दहेज प्रथा
12. जल संरक्षणः- हमारा दायित्व
13. इक्कीसवीं सदी का भारत

Chalia sir
YouTube Channel
Chalia Smart Study
By Chalia Sir